



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY  
भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section I  
प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 96]

नई दिल्ली, मंगलवार, अप्रैल 10, 2012/बैत्र 21, 1934

No. 96]

NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 10, 2012/CHAITRA 21, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिपत्रिका

नई दिल्ली, 10 अप्रैल, 2012

(अन्तिम जांच परिणाम)

**विषय :** यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर) में उत्पादित या वहाँ से निर्यातित पेन्टाइरायथिटॉल का आयात करने के संबंध में पाटनरोधी जांच।

सं. 14/43/2010-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिन्हें एतदपश्चात् नियम या पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

**क. जांच में अपनाई गई प्रक्रिया**

1. इस जांच के संबंध में अधोलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है :—

(i) उपर्युक्त नियमावली के अन्तर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी भी कहा गया है) को मै. कानोडिया कैमिकल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज लि., अंकलेश्वर, गुजरात से घोलू उद्योग की ओर से दायर एक आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर) (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध क्षेत्र कहा गया है) में उत्पादित या वहाँ से निर्यातित पेन्टाइरायथिटॉल (जिसे एतदपश्चात् पेन्ट या सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

(ii) प्राधिकारी ने जांच प्रारम्भ करने को न्यायोचित ठहराने के लिए आवेदक द्वारा प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर सम्बद्ध क्षेत्र से सम्बद्ध वस्तुओं के आयात के विरुद्ध जांच प्रारम्भ करने का निश्चय किया है।

(ii) प्राधिकारी ने, जॉच प्रारम्भ करने की प्रक्रिया से पूर्व, भारत में यूरोपियन यूनियन के प्रतिनिधिमंडल को पाटनरोधी नियमावली के उपनियम 5(5) के अनुसार यह अधिसूचित कर दिया कि सम्बद्ध भूभाग में सम्बद्ध वस्तुओं के कथित पाटन की सूचना प्राप्त हुई है।

(iv) प्राधिकारी ने सम्बद्ध भू-भाग से संबद्ध वस्तुओं के आयात के संबंध में पाटनरोधी जॉच शुरू करने की एक सार्वजनिक सूचना सं0 14/43/2010 – डीजीएडी दिनांक 11 जनवरी, 2011 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित कराई।

(v) प्राधिकारी ने सभी जात निर्यातकों, जिनके विवरण आवेदक ने उपलब्ध कराए थे और उद्योग एसोसिएशनों को सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) में उल्लिखित प्रक्रिया के अनुसार अपने दृष्टिकोण लिखित रूप में भेजने के लिए अवसर प्रदान किया।

(vi) प्राधिकारी ने संबद्ध भू-भाग से संबद्ध वस्तु का भारत में आयात करने वाले सभी आयातकों को भी सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें पत्र जारी होने की तारीख से 40 दिनों के अन्दर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का सुझाव दिया।

(vii) प्राधिकारी ने आवेदन के अगोपनीय पाठ की एक प्रति जात निर्यातकों और भारत में यूरोपियन यूनियन के प्रतिनिधिमंडल को पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अन्तर्गत उपलब्ध कराई। आवेदन की एक प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उनके अनुरोध पर उपलब्ध कराई गई।

(viii) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध भूभाग में जात निम्नलिखित निर्यातकों को प्रश्नावली भिजवाई जिसमें वे सूचना उपलब्ध करा सकें:

क्रम सं0	कंपनी का नाम	देश
1.	मै0 पोलिओली (एसपीए)	इटली
2.	मै0 इरकरोज एस.ए.	स्पेन
3.	मै0 पेट्रोकेम कारलैस लि0	यूके
4.	मै0 पर्सटार्प ऑक्सो बेल्जियम एबी	बेल्जियम
5.	मै0 पर्सटार्प केमिकल्स जीएमबीएच	जर्मनी

(ix) जांच प्रारंभ करने की अधिसूचना के प्रत्युत्तर में मैसर्स पर्सटार्प केमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी, और मै0 इक्रास एस.ए., स्पेन ने उत्तर दिया।

(x) प्रश्नावलियाँ, पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अन्तर्गत आवश्यक जानकारी मांगते हुए, भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित जात आयातकों/उपयोगकर्ताओं को भी भेजी गई:-

क्र.सं.	कंपनी का नाम	क्र.सं.	कंपनी का नाम
1.	मै0 विबर्योर पेट्स प्रा0 लि0, मुंबई	17.	मै0 एच.आर. ट्रेडिंग कं0 प्रा0 लि0, मुंबई
2.	मै0 सनमान ट्रेड इम्पैक्स प्रा0 लि0, मुंबई	18.	मै0 लियो केमोप्लास्ट प्रा0 लि0, मुंबई
3.	मै0 सर्वफ केमिकल्स लि0, मुंबई	19.	मै0 सर्वार डाई केमि. मुंबई
4.	मै0 एल्कॉन इंटरप्राइजेज लि0, कोलकाता	20.	मै0 बर्गर पेट्स इंडिया लि0, मुंबई
5.	मै0 ए.वी.एम. सेल्स प्रा0 लि0, कोलकाता	21.	मै0 सेचुरी इन्का लि0, मुंबई
6.	मै0 सिबा स्पेशिलिटी केमिकल्स (इंडिया) लि0, मुंबई	22.	मै0 एडिसन पेट्स एंड केमिकल्स, चेन्नई
7.	मै0 डेक्को पेट्स, हैदराबाद	23.	मै0 कोटेस ऑफ इंडिया लि0, मुंबई
8.	मै0 दुजोदवाला पेपर केमिकल्स लि0, रायगढ़	24.	मै0 हार्डकास्टल एंड वाउलमैन्युफैक्चरिंग कं0 लि0, मुंबई
9.	मै0 गार्गी इंडस्ट्रीज प्रोप. नवी मुंबई	25.	मै0 गुडलास नेरोलेक पेट्स लि0 मुंबई
10.	मै0 मितसु इंडस्ट्रीज लि0, मुंबई	26.	मै0 हीरो डाई केमि. इंडस्ट्रीज, मुंबई
11.	मै0 रेजिन एंड पिरमेंट्स, पितमपुर(म.प्र.)	27.	मै0 हिंदुस्तान इंक्स एंड रेजिन लि0, मुंबई
12.	मै0 केमिकलर एजेंसी, कोलकाता	28.	मै0 आईवीपी लि0, थाणे
13.	मै0 शालीमार पेट्स लि0, हावड़ा	29.	मै0 जेन्सन एंड निकोलसन(आई) लि0, कोलकाता
14.	मै0 दुजोदवाला पेपर केमिकल्स, मुंबई	30.	मै0 पारस डाईस एंड केमिकल्स, मुंबई

15.	मै0 इस्टकॉर्प इंटरनेशनल, कोलकाता	31.	मै0 पर्सटार्प एजिस केमिकल्स प्रा0 लि0, वल्साड
16.	मै0 गारवेयर पोलिएस्टर लि0, मुंबई	32.	मै0 गुडलास नेरोलक पेंट लि0, मुंबई

(xi) जांच शुरुआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में मैसर्स पर्सटार्प केमिकल्स इंडिया प्रा0 लि0, बर्गर पेंट्स इंडिया लि0, कन्साई नेरोलेक पेंट्स लि0 और इंडियन पेंट ऐसोसिएशन ने उत्तर दिया।

(xii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सार्वजनिक फाइल के रूप में प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ को उपलब्ध कराया तथा इसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा।

(xiii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई जानकारी की गोपनीयता दावे का पालन करते हुए जाँच की गई। प्राधिकारी द्वारा संतुष्ट होने पर यथा-वारेंटेड गोपनीयता दावों को स्वीकार कर लिया गया और इस जानकारी को गोपनीय मान लिया गया तथा इसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया गया। गोपनीय आधार पर जानकारी प्रदान कराने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दर्ज जानकारी का अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराएं।

(xiv) यह जांच, जांच की अवधि 1 अप्रैल, 2009 से 30 जून, 2010 तक के लिए की गई थी। तथापि, क्षति जांच का आयोजन 2006-07, 2007-08, 2008-09 और जांच की अवधि के लिए किया गया।

(xv) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया कि वह जांच की अवधि के दौरान और विगत तीन वर्षों के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयात का विवरण उपलब्ध कराएं। तथापि, इस जांच में डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर विश्वास नहीं किया गया क्योंकि याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रदान कराई गई आईबीआईएस जानकारी द्वारा प्रदर्शित मात्रा डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदर्शित मात्रा से अधिक थी। घरेलू उद्योग ने आत्म-निवेदन किया कि उनके द्वारा प्रस्तुत आईबीआईएस की रिपोर्ट में मद विवरण की जानकारी शामिल है और यह अन्य वर्गीकरण के अन्तर्गत रिपोर्ट किए गए विचाराधीन उत्पाद को शामिल करती है।

(xvi) आवेदक द्वारा सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांत (जीएएपी) के आधार पर प्रस्तुत जानकारी के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं की अधिकतम उत्पादन लागत, उसे बनाने और उसकी बिक्री करने की लागत की गणना की गई ताकि यह निश्चय किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति से बचाने के लिए पर्याप्त होगा।

(xvii) प्राधिकारी ने नियम 6(6) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों को संगत जानकारी मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करने के लिए 7 मार्च, 2012 को मौखिक सुनवाई का आयोजन किया। मौखिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों को यह सुझाव दिया गया कि वे मौखिक रूप से प्रस्तुत जानकारी को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें। हितबद्ध पक्षकारों को अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विचारों/जानकारी के संबंध में खंडनकारी तर्क/प्रत्युत्तर देने की अनुमति दी गई। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रस्तुतियों पर उपयुक्त ढंग से विचार किया।

(xviii) जांच की प्रक्रिया के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों और प्रदान कराई गई जानकारी, जो साक्ष्य द्वारा समर्थित थी और जिसे मौजूदा जांच के लिए संगत माना गया, पर, प्राधिकारी ने उपयुक्त ढंग से विचार किया।

(xix) \*\*\* इस अंतिम निष्कर्ष में एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत कराई गई जानकारी और पाटनरोधी नियमावली के अन्तर्गत प्राधिकारी द्वारा विचार की गई जानकारी शामिल है।

## **ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु**

### **ख.1 घरेलू उद्योग के विचार**

2. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए:-

(i). पेन्टाइरायथ्रिटॉल कार्बनिक रसायनों की श्रेणी में आता है, सफेद क्रिस्टलाइन पाउडर फार्म में उत्पादित किया जाता है और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के

अध्याय शीर्षक 2905.42 के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है। यह आईटीसी एचएस वर्गीकरण 2905 4200 के अन्तर्गत आता है।

- (ii) पेन्टाइरायथ्रिटॉल का उत्पादन इलैक्ट्रोडायलसिस पृथक्करण तकनीक या विखंडित क्रिस्टलीकरण तकनीक का प्रयोग करके किया जाता है। तथापि, दोनों तकनीकों से उत्पादित उत्पाद के गुण-धर्मों में कोई अन्तर नहीं है। उत्पादित पेन्टाइरायथ्रिटॉल तकनीकी ग्रेड या नाइट्रेशन ग्रेड का हो सकता है। इन दोनों ग्रेडों में सैदांतिक अंतर इसकी शुद्धता, क्रिस्टल के आकार क्रिस्टल की एकरूपता में होता है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी ग्रेड पेन्टाइरायथ्रिटॉल और नाइट्रेशन ग्रेड पेन्टाइरायथ्रिटॉल के बीच अन्य कोई भौतिक अन्तर नहीं है। दोनों ग्रेडों का उत्पादन समान प्रक्रिया द्वारा होता है। वस्तुतः यह केवल उत्पादन के पश्चात और उत्पाद का विश्लेषणात्मक परीक्षण करने के स्तर पर ग्रेडेशन का मामला होता है। 98% से अधिक की शुद्धता वाला पेन्टाइरायथ्रिटॉल और बेहतर क्रिस्टल फार्मेशन वाला पेन्टाइरायथ्रिटॉल का उपयोग विस्फोटक उद्योग में किया जा सकता है और इसलिए इसी ग्रेड को वाणिज्यिक पारलास में “नाइट्रेशन ग्रेड” के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। तथापि, उत्पादन प्रक्रिया के रूप में इसका अधिकांश उत्पादन “तकनीकी ग्रेड” का होता है। नाइट्रेशन ग्रेड में उत्पादन 2% से भी कम का होता है जबकि डाई- पेन्टाइरायथ्रिटॉल का उत्पादन 0.5% से कम है। 97% से अधिक उत्पादन तकनीकी ग्रेड का होता है। इसके अतिरिक्त, आयात प्राथमिकता तकनीकी ग्रेड में ही किया जाता है।
- (iii) पेन्टाइरायथ्रिटॉल के अधिकांश भाग का प्रयोग अल्काइड रेजिंस, ईस्टर्स और ईथर अवकलज तथा नाइट्रो-अवकलजों का विनिर्माण करने में किया जाता है। अवकलजों (उदाहरणार्थ ईस्टर्स, ईथर्स, अल्काइड रेजिंस) का प्रयोग पेट, वार्निशों और अन्य तल कोटिंग उद्योगों में सुखाने वाले एजेंट के रूप में किया जाता है। अभी हाल के वर्षों में इसके अवकलजों का प्रयोग विभिन्न उद्योगों में लुब्रीकेंट के रूप में भी किया गया है। इस उत्पाद का अधिकांश प्रयोग अल्काइड रेजिनों, रेजिन ईस्टर्स, प्लास्टीसाइजर्स, मुद्रण स्याहियों, सिंथेटिक रबड़, प्लास्टिक के लिए स्टेबिलाइजर्स, आशोधित ड्राईंग ऑयल्स, डिटोनेटर्स, विस्फोटकों, फार्मास्युटिकल्स, कोर तेलों और सिंथेटिक लुब्रीकेंट्स आदि का निर्माण करने के लिए किया जाता है।

(iv) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पेन्टाइरायथ्रिटॉल और संबद्ध देश से निर्यातित पेन्टाइरायथ्रिटॉल में कोई फर्क नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पेन्टाइरायथ्रिटॉल और संबद्ध देश से आयातित पेन्टाइरायथ्रिटॉल की तुलना भौतिक और रासायनिक गुणविशेषों, विनिर्माण प्रक्रिया और तकनीक(पूरे विश्व में उत्पादकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली), कार्यों एवं प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशों, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन और टैरिफ वर्गीकरण के रूप में की जा सकती है। दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता लोग इन दोनों का विनिमय करते हैं। याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित पेन्टाइरायथ्रिटॉल और संबद्ध देशों से आयातित पेन्टाइरायथ्रिटॉल समान वस्तु हैं।

(v) डि-पेन्टाइरायथ्रिटॉल और पेन्टाइरायथ्रिटॉल दो अलग-अलग तरह के उत्पाद हैं। डि-पेन्टाइरायथ्रिटॉल विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर है।

## ख.2 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

3. निर्यातकों ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किया है:-

(i) याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में उल्लेख किया है कि 'डि-पेन्टाइरायथ्रिटॉल' विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर है। तथापि, याचिकाकर्ता ने यह भी उल्लेख किया है कि नाइट्रेशन ग्रेड के आयात की मात्रा और याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित मात्रा को ध्यान में रखते हुए यह तथ्य कि दोनों ग्रेडों के आयातों के संबंध में पूरी जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है (आयातकों के नाम आंकड़ा प्रदान कराने वाली एजेंसियों जिनमें डीजीसीआईएडएस भी शामिल है, द्वारा पूरी तरह से उपलब्ध न कराए जाने के कारण) और पाटन मार्जिन एवं क्षति के संभावित प्रभावों को देखते हुए याचिकाकर्ता ने इस स्तर पर दोनों ग्रेडों के लिए – आयात के बारे में और पाटन मार्जिन तथा इसकी निजी निष्पादन के संबंध में संयुक्त रूप से जानकारी प्रदान कराई है।

(ii) इस प्रकार, इससे यह स्पष्ट है कि याचिकाकर्ता ने अपने आंकड़ा संबंधी जानकारी में उन उत्पादों को भी शामिल किया है जो आयात, पाटन मार्जिन, भौतिक क्षति, कीमत में गिरावट, कम कीमत पर बिक्री करने और इसके सामयिक संबंध का मूल्यांकन करने के लिए जांच के अन्तर्गत उत्पाद के दायरे में नहीं आता है। इस प्रकार, उन उत्पादों को शामिल करने से जो संबद्ध वस्तुओं के दायरे से बाहर हैं, पाटन, भौतिक क्षति और

सामयिक संपर्क का निर्धारण ठीक से नहीं होगा। इस कारण से यह याचिका नामंजूर कर दी जानी चाहिए।

### ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

4. प्रस्तुत जांच में विचाराधीन उत्पाद पेन्टाइरायथ्रिटॉल है जो एक कार्बनिक यौगिक है और जिसका उपयोग एल्काइक रेजिन, रोजिन ईस्टर्स, प्लास्टीसाइजर्स, मुद्रण स्थाहियों, सिंथेटिक रबड़, प्लास्टिक के लिए स्टेबिलाजर्स, आशोधित ड्राईंग ऑयल्स, डिटोनेटर्स, विस्फोटकों, फार्मास्युटिकल्स, मुख्य तंलों और सिंथेटिक लुब्रीकेंट्स का विनिर्माण करने के लिए किया जाता है। पेन्टाइरायथ्रिटॉल, तकनीकी ग्रेड या नाइट्रेशन ग्रेड का हो सकता है और दोनों ग्रेडों को विचाराधीन उत्पाद और मौजूदा जांच के दायरे के अंतर्गत शामिल किया गया है। पेन्टाइरायथ्रिटॉलिस को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अध्याय 29 के अन्तर्गत सीमाशुल्क उप-शीर्षक संख्या 2905.42 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। तथापि, सीमाशुल्क एवं आईटीसी एचएस वर्गीकरण केवल निर्देशात्मक हैं और किसी भी तरह से मौजूदा जांच के दायरे में बाध्यकारी नहीं हैं।
5. पाटनरोधी नियमावली का नियम 2(घ) यह स्पष्ट करता है कि समान वस्तु का आशय, ऐसी वस्तु से है जो विचाराधीन उत्पाद के बारे में सभी तरह से समान और आइडेंटिकल हो अथवा ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में कोई अन्य वस्तु जिसका गुणधर्म जांचाधीन वस्तु के समान हो, से है।
6. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु और संबद्ध देश में उत्पादित या निर्यातित वस्तु दोनों समान वस्तुएं हैं। प्राधिकारी यह नोट करता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पेन्टाइरायथ्रिटॉल के गुणधर्म संबद्ध देश से आयातित पेन्टाइरायथ्रिटॉल के गुणधर्म के समान हैं। उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी धारित करता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पेन्टाइरायथ्रिटॉल तथा संबद्ध देश से आयातित किया जा रहा पेन्टाइरायथ्रिटॉल दोनों पाटनरोधी नियमावली के आशय के अन्तर्गत समान वस्तुएं हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि उत्पादन प्रक्रिया अधिकांशतः टेक्निकल ग्रेड के उत्पादन का परिणाम है और नाइट्रेशन ग्रेड से 2% से कम उत्पादन होता है जबकि डाई-पेंटा का उत्पादन 0.5% से कम है। अतः डाई-पेन्टाइरायथ्रिटॉल मौजूदा जांच के दायरे से बाहर है।

7. यह तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ता ने आयातों, पाटन मार्जिन, कीमत में कटौती सहित भौतिक क्षति, कम कीमत पर बिक्री आदि और सामयिक संपर्क का मूल्यांकन करने के लिए विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर के उत्पादों से संबंधित आंकड़ा जानकारी प्रस्तुत की है। इस प्रकार, संबद्ध वस्तु के दायरे से बाहर के उत्पादों को शामिल करने से पाटन, भौतिक क्षति और सामयिक संपर्क का गलत निर्धारण होगा। तथापि, यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में जानकारी शामिल की है। नाइट्रेशन ग्रेड, विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर नहीं हैं। इसलिए, पाटन और क्षति विश्लेषण के उद्देश्य के लिए याचिका में तकनीकी ग्रेड और नाइट्रेशन ग्रेड के लिए संयुक्त जानकारी से यह सिद्ध नहीं होता है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर के उत्पादों से संबंधित आंकड़े दिए गए हैं।

#### ग. घरेलू उद्योग के विचार

##### ग.1 घरेलू उद्योग के विचार

8. घरेलू उद्योग के आधार के संबंध में, घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किया गया:

क. यह याचिका मैसर्स कनोडिया कैमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लि0, अंकलेश्वर, गुजरात द्वारा दायर की गई है। भारत में दो अन्य कंपनियां भी हैं जो पेन्टाइरायथ्रिटॉल का उत्पादन करने की क्षमता रखती हैं, उनके नाम हैं मैसर्स एसिएन पेंट्स(इंडिया) लि0 और मै0 पर्सटार्प्स कैमिकल्स इंडिया (पी) लि0।

ख. हालांकि एशियन पेंट्स प्राथमिकता अपनी जरूरत के उद्देश्यों के लिए उत्पादन करता है, कंपनी कुछ माल बाजार में भी बेचती है। याचिकाकर्ता ने एशियन पेंट्स के उत्पादन पर उस सीमा तक पृथक रूप से विचार किया है। इसके अतिरिक्त, पर्सटार्प्स इंडिया भी संबद्ध वस्तु का उत्पादन करता है। तथापि, इसने भारी मात्रा में संबद्ध वस्तु का आयात करना शुरू कर दिया। पर्सटार्प्स इंडिया द्वारा किए गए आयात की मात्रा बहुत अधिक है। वास्तव में, याचिकाकर्ता के जान के अनुसार पर्सटार्प्स अब पूरी तरह से आयात ही करता है और जांच अवधि में इसने अपना उत्पादन बंद कर दिया है।

ग. उपयुक्त के मद्देनजर याचिकाकर्ता का विचार है कि परस्टार्प और ऐसियन पैटेस दोनों ही देश में संबद्ध वस्तु के उत्पादक के रूप में विचार किए जाने के पात्र नहीं हो सकते।

घ. इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ता ने ऐसियन पैटेस के उत्पादन को स्व-प्रयोग उत्पादन और व्यापारी उत्पादन के रूप में अलग-अलग दर्शाया है। याचिकाकर्ता ने इस कंपनी के व्यापारी उत्पादन को वर्तमान याचिका दायर करने के आधार का निर्धारण करने के उद्देश्यों के लिए विचार किया है हालांकि याचिकाकर्ता का विश्वास है कि ऐसियन पैटेस के समस्त उत्पादन को इस आधार पर पृथक करना उपयुक्त होगा कि कंपनी इस उत्पाद का उत्पादन पर्याप्त रूप से अपनी जरूरत के लिए करती है, यह देखा जा सकता है कि अकेले याचिकाकर्ता का उत्पादन देश में व्यापारी उत्पादन का 25% से अधिक है। यह स्पष्ट है कि याचिकाकर्ता का वर्तमान याचिका को दायर करने का पूर्ण आधार बनता है।

इ. याचिकाकर्ता ने स्थापित किया है कि याचिकाकर्ता का उत्पादन भारत में कुल उत्पादन का अधिकांश हिस्सा बनता है (ऐसियन पैटेस द्वारा कैप्टिव खपत को शामिल करते हुए और अलग करते हुए, दोनों तरह से) और इसलिए याचिकाकर्ता को नियमावली के आशय के अन्तर्गत 'घरेलू उद्योग' के रूप में माना जाना चाहिए।

#### ग.2 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

9. निर्यातकों और उपभोक्ताओं ने घरेलू उद्योग के आधार के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किया है:

- ऐसियन पैटेस लि�0 घरेलू बाजार में संबंधित उत्पाद के लिए पात्र घरेलू उत्पादक हैं। कैप्टिव उत्पादन को घरेलू उद्योग के उदायरे से अलग नहीं किया जा सकता है।
- याचिकाकर्ता ने उल्लेख किया है कि एशियन पैटेस लि�0 को पात्र घरेलू उत्पादक के रूप में नहीं माना जा सकता है क्योंकि यह कैप्टिव उत्पादक है और संबद्ध वस्तु की केवल सीमित मात्रा ही बाजार में बेचता है। कैप्टिव उत्पादकों को घरेलू उद्योग की परिभाषा से केवल इस कारण अलग नहीं किया जा सकता कि वे घरेलू बाजार में अपना

पूर्ण उत्पादन नहीं बेचते हैं बल्कि वे इसका अपने कुछ अन्य उत्पादों में प्रयोग भी करते हैं।

iii. पर्सटार्प द्वारा आयात प्राथमिकता जर्मनी से किए जाते हैं और उन्हें अलग किया जाना चाहिए।

### ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

10. मैसर्स कनोडिया कैमिकल्स एंड इंडस्ट्रीज लिंग ने आवेदन दायर किया है। यह एक बहु-उत्पाद कंपनी है और कई उत्पादों का उत्पादन करती है। आवेदक ने संबद्ध वस्तु की कुछ मात्रा का आयात वर्ष 2008-09 में सीधे स्पेन से और वर्ष 2009-10 में इसकी एक संबद्ध कंपनी से आयात किया था। भारत में उत्पाद के कुल आयातों, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन और खपत की तुलना में इन आयातों की मात्रा बहुत अल्प है। प्राधिकारी यह धारित करता है कि याचिकाकर्ता या उसके संबद्ध पक्षकार द्वारा आयात की गई मात्रा बहुत कम है और याचिकाकर्ता को नियम 2(ख) के आशय के अन्तर्गत पात्र घरेलू उद्योग के रूप में माना जाना चाहिए।
11. आवेदक ने प्रस्तुत किया है कि एसियन पेंट्स प्राथमिकतः कैप्टिव उद्देश्यों के लिए पेंटा का उत्पादन करती है और यह कंपनी अपनी कुछ सामग्री का बाजार में विपणन भी करती है। याचिकाकर्ता ने एसियन पेंट्स के उत्पादन को व्यापारी बिक्रियों की सीमा तक माना है। पर्सटार्प भी संबद्ध वस्तु का उत्पादन करता है। तथापि, इसने संबद्ध वस्तु का बहुत अधिक मात्रा में आयात करना शुरू कर दिया है और याचिकाकर्ता के जान के मुताबिक पर्सटार्प अब पूरी तरह से आयात पर निर्भर है और इसने जांच अवधि में अपना उत्पादन बंद कर दिया है। हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि एसियन पेंट्स का उत्पादन केवल इस आधार पर पृथक नहीं किया जा सकता है कि वे इसकी कुछ मात्रा की खपत स्व-प्रयोग के लिए करते हैं।
12. सुनवाई के पश्चात एसियन पेंट्स ने एक पत्र प्रस्तुत किया जिसमें उसने पेन्टाइरायथिटॉल का विभिन्न स्रोतों जिसमें घरेलू उद्योग और विभिन्न स्रोतों से आयात शामिल हैं, अधिप्रापण करने की जानकारी दी है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि एसियन पेंट्स ने पेन्टाइरायथिटॉल का संबद्ध देश और अन्य देशों से आयात किया है और इन आयातों की मात्रा बहुत अधिक है। रिकॉर्ड में उपलब्ध जानकारी के अनुसार एसियन पेंट्स का विवरण

निम्नलिखित है:

क्रम सं.	विवरण	जांच-अवधि	2009-10	2010-11
1	पेन्टाइरायथ्रिटॉल का उत्पादन	5,875	4,700	5,400
2	पेन्टाइरायथ्रिटॉल का आयात			
	> संबद्ध देश से	164	-	1,234
	> अन्य देशों से	-	-	-
3	कनोडिया कैमिकल्स से अधिप्रापण	4,928	4,059	3,145
4	पेन्टाइरायथ्रिटॉल की बिक्री मात्रा	2,570	2,056	2,509
5	पेन्टाइरायथ्रिटॉल की कैप्टिव खपत	3,030	2,424	2,891

13. प्राधिकारी ने पाया कि (क) एसियन पेंट्स पेन्टाइरायथ्रिटॉल का उत्पादन कैप्टिव खपत और व्यापारी बिक्रियों, दोनों के लिए करता है, (ख) कंपनी पेन्टाइरायथ्रिटॉल का उत्पादन और उसकी बाजार में बिक्री करने के बावजूद यह घरेलू और आयातित, दोनों स्रोतों से पेन्टाइरायथ्रिटॉल का क्रय करती है, (ग) कंपनी द्वारा घरेलू एवं आयातित स्रोतों, दोनों से खरीद की मात्रा बहुत अधिक है, (घ) कंपनी ने संबद्ध भू-भाग से पेन्टाइरायथ्रिटॉल का आयात किया है, (ड.) याचिकाकर्ता ने तर्क दिया है कि संबद्ध देश से किए गए इन आयातों की मात्रा को ध्यान में रखते हुए एसियन पेंट्स को अपात्र घरेलू उद्योग माना जाना चाहिए, (च) हालांकि कंपनी ने नहीं दी है और इसलिए इस कंपनी से संबंधित जानकारी को किसी भी हाल में क्षति निर्धारण के लिए शामिल नहीं किया जा सकता है। तथापि, प्राधिकारी मानता है कि इस तथ्य को देखते हुए कि कंपनी ने क्षति के संबंध में कोई जानकारी नहीं दी है, इसलिए यह निर्धारण करना अनावश्यक है कि एसियन पेंट्स घरेलू उद्योग है या नहीं और याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा बनता है।

14. प्राधिकारी यह नोट करता है कि यद्यपि पर्सटार्प मौजूदा जांच में प्रतिभागिता करता है परन्तु कंपनी ने इसकी क्षमता, उत्पादन और इसके भारतीय प्लांट्स पेन्टाइरायथ्रिटॉल की बिक्री के संबंध में कोई जानकारी प्रदान नहीं की है न ही कंपनी ने याचिकाकर्ता के इस दावे का खंडन किया है कि पर्सटार्प ने भारत में अपना उत्पादन बंद कर दिया है और यह अब पूरी तरह से

आयातों पर निर्भर है। पर्सटार्प ने याचिकाकर्ता के दावे का भी खंडन नहीं किया है कि जांच अवधि के दौरान इसका उत्पादन शून्य था।

15. प्राधिकारी नोट करता है कि आवेदक आधार को संतुष्ट करने की अपेक्षित प्रक्रिया पूरी करता है और पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) और नियम 2(ख) के अन्तर्गत यथापेक्षित घरेलू उद्योग बनता है क्योंकि इसका घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं का हिस्सा, एसियन पेंट्स के कैप्टिव खपत सहित या बिना दोनों तरह से, 50% से अधिक बनता है। प्राधिकारी मानता है कि यह निर्धारित करना आवश्यक नहीं है कि क्या एसियन पेंट्स का उत्पादन कैप्टिव खपत की सीमा तक अथवा पूर्ण उत्पादन शामिल किया जाए या नहीं, न ही यह निर्धारित करना जरूरी है कि क्या इसके आयातों के मद्देनजर इसे पात्र घरेलू उद्योग के रूप में माना जाए क्योंकि आवेदक ने एसियन पेंट्स के पूर्ण उत्पादन को शामिल करके अपना तर्क प्रस्तुत किया है।

## घ. पाटन मार्जिन

### घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

16. घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि के दौरान पाटन मार्जिन और निर्यात कीमत के संबंध में निम्नलिखित मुद्दे प्रस्तुत किए:

- i. सामान्य मूल्य: संबंधित उत्पाद की यूरोपियन यूनियन के घरेलू बाजार में कीमत के संबंध में साक्ष्य प्राप्त करने के प्रयास किए गए। कीमत का साक्ष्य प्रकाशित स्रोतों से प्राप्त करने का भी प्रयास किया गया। तथापि, यूरोपियन यूनियन की घरेलू बाजार से कीमत के संबंध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी और इसलिए स्वीडन को छोड़कर ईयू से सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे माल की कीमतों, उद्योग के खपत मानदण्ड, कंवर्जन लागत का अनुमान, बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा अन्य तर्कसंगत लाभ-मार्जिन को ध्यान में रखकर किया गया।
- ii. निर्यात कीमत: निर्यात कीमत का निर्धारण भारत में भारित औसत आयात कीमत के आधार पर किया गया है। ये कीमतें आयातों का आकलनीय मूल्य हैं। पाटनरोधी संबंधी डब्ल्यूटीओ करार भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अनुसार सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना व्यापार के समान स्तर पर करना आवश्यक है। अतः निर्यात कीमत को निम्नलिखित व्यय के लिए समायोजित किया गया जो निर्यातकों और/या उत्पादकों द्वारा निर्यातित देश में वहन की जाती है: सामुद्रिक किराया, सामुद्रिक बीमा, अन्तर्राष्ट्रीय

परिवहन, पत्तन हैंडलिंग और पत्तन प्रभार तथा बैंक प्रभार। तदुसार निवल फैक्टरी बाह्य निर्यात कीमत की गणना करने के लिए उपर्युक्त के अनुसार आवश्यक समायोजन किया गया है।

iii. **पाटन मार्जिन:** यथापरिकलित सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत पर विचार करते हुए यह पाया गया कि संबद्ध देश से निर्यातक भारतीय बाजार में पेन्टाइरायथ्रिटॉल का भारी मात्रा में पाटन कर रहे हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि ईयू से निर्यातकों ने इनपुट लागत में वृद्धि के बावजूद कीमत बढ़ाने की बजाय कीमतों को कम करने को अधिमानता दी है जिससे अत्यधिक पाटन मार्जिन की मौजूदगी स्पष्ट है।

**घ.2 निर्यातकों/आयातकों और अन्य हितबद्ध यक्षकारों के विचार**

17. निर्यातकों और उपभोक्ताओं ने सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किए हैं:

क) याचिका में दर्शाया गया सामान्य मूल्य अवैध है और असंगत साक्ष्यों पर आधारित है:

- i. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि संबद्ध वस्तु की संबद्ध देश में प्रचलित कीमत उनको उपलब्ध नहीं हुई है और इसके परिणामस्वरूप उन्होंने सामान्य कीमत 'गठन करने' का आश्रय लिया है।
- ii. याचिकाकर्ता ने कच्चे माल के लिए भी सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।
- iii. याचिकाकर्ता ने डीजीएफटी द्वारा प्रकाशित एसआईओएम में दिए गए खपत मानदंडों का उपयोग किया है जो हमेशा उच्च रहते हैं।
- iv. याचिकाकर्ता ने ब्याज के रूप में 5% और लाभ के रूप में अन्य 5% जोड़ा है।
- v. इसके अतिरिक्त उन्होंने फार्मलीहाइड के लिए सीएनवी में ब्याज के रूप में 5% तथा पेंटा की कुल लागत पर 5% ब्याज अलग से जोड़ा है।
- vi. यूरोप में आंकड़ों की उपलब्धता न होने पर भारत में प्रचलित लागत और कीमतों पर विचार करना अनुमेय नहीं है।
- vii. घरेलू उद्योग ने कच्चे माल की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों तथा घरेलू उद्योग के खपत मानदण्डों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। यह प्रणाली डब्ल्यूटीओ के अनुकूल नहीं है क्योंकि निर्यातक देश में संबद्ध वस्तुओं की व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में भी घरेलू खपत होती है।

viii. याचिकाकर्ता ने बाजार अनुसंधान रिपोर्ट का प्रयोग नहीं किया है जो वेबसाइट पर आसानी से उपलब्ध हैं। यूरोस्टेट द्वारा प्रदान कराए गए आंकड़ों पर ईयू में सामान्य मूल्य के रूप में विचार किया जा सकता है।

ख) याचिका में प्रस्तुत की गई निर्यात कीमत अतर्कसंगत है।

- i. सामुद्रिक किराया के लिए साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया है। इसी तरह, अन्य कटौतियों के लिए भी साक्ष्य नहीं दिया गया है।
- ii. बाकी चार प्रभार सीआईएफ कीमत के 0.5% की दर से किए गए हैं। हालांकि, सामुद्रिक बीमा को सीआईएफ कीमत से जोड़ा जाना चाहिए परन्तु तैंक प्रभार, अन्तर्देशीय परिवहन, पत्तन हैंडलिंग प्रभार, सीआईएफ मूल्य के 0.5% से अधिक नहीं हो सकते।
- iii. निर्यातक ने पर्सटार्प इंडिया की पुनर्बिंक्री कीमत को निवल निर्यात कीमत के रूप में मानने का अनुरोध किया है।

ग) उपर्युक्त कारणों पाठन मार्जिन के संबंध में कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।

घ) बाजार में कीमत अंतर यूरो मजबूत होने के कारण आया है।

### घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

18. धारा 9क(1)(ग) के अन्तर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अग्रशय है:

- (i) समान वस्तु के लिए, उपधारा(6) के अन्तर्गत दिए गए नियमों के अनुसार यथा-निर्धारित देश या भू-भाग में खपत के आशय के अन्तर्गत, व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में, तुलनीय कीमत, या
- (ii) जब निर्यातक देश के घरेलू बाजार या भू-भाग में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की बिक्री न होती हो या विशिष्ट बाजार स्थिति के कारण या निर्यातक देश के घरेलू बाजार या भू-भाग में बिक्री की मात्रा कम हो जिससे इन बिक्रियों की उचित तुलना के लिए अनुमति न हो तो

(क) उपधारा(6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार यथा-निर्धारित निर्यातक देश या भू-भाग या एक समुचित तृतीय देश से निर्यातित समान मद की तुलनीय

### प्रतिनिधिक कीमत; अथवा

(ख) उक्त वस्तु के उत्पादन के देश में कुल उत्पादन लागत जिसमें उप-धारा (6) के अन्तर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक व्यय, बिक्री और सामान्य लागत तथा लाभ को तर्क-संगत ढंग से जोड़ा गया हो।

वस्तु के उत्पादन के देश के अतिरिक्त किसी अन्य देश से आयात और जहां वस्तु को निर्यात के देश से केवल जहाज द्वारा लाया गया है या ऐसी वस्तु का उस देश में निर्यात के लिए उत्पादन नहीं होता है या जहां निर्यात के देश में तुलनीय कीमत नहीं है, ऐसे मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्धम के देश में इसकी कीमत के संबंध में किया जाएगा।

19. प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों के इरादों को पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के मामले में नोट करता है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि याचिका में पाटन के लिए प्रथमव्यष्टया पर्याप्त साक्ष्य होने चाहिए ताकि ऐसी जांच शुरुआत करने को उचित ठहराया जा सके जिसके लिए याचिकाकर्ता से अपेक्षा की जाती है कि वह सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी प्रदान करेगा। अब जब एक निर्यातक (पर्सटार्प केमिकल्स जीएमबीएच) ने संगत जानकारी उपलब्ध कराई है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए उसे ही अंगीकार किया है। इस दावे के संबंध में कि याचिकाकर्ता ने वेबसाइट पर आसानी से उपलब्ध बाजार अनुसंधान रिपोर्ट का प्रयोग नहीं किया है, प्राधिकारी नोट करता है कि याचिका में पाटन के प्रथमव्यष्टया पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं। वास्तव में प्रश्नावली में दिए गए उत्तरों के आधार पर निर्धारित पाटन मार्जिन यह स्थापित करता है कि निर्यातकों द्वारा बड़ी मात्रा में पाटन किया गया है।
20. इस दावे के संबंध में कि बाजार कीमत में अंतर यूरो मजबूत होने के कारण हुआ है, प्राधिकारी नोट करता है कि सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत दोनों पर एक ही मुद्रा में विचार करना अपेक्षित होता है, जैसाकि वर्तमान मामले में किया गया है। इससे निर्यातकों द्वारा भारी मात्रा में पाटन की मौजूदगी प्रदर्शित होती है।
21. इस दावे के संबंध में कि पर्सटार्प की पुनर्बिक्री कीमत निवल निर्यात कीमत है, प्राधिकारी से भारत में पुनर्बिक्री कीमत पर विचार करने का अनुरोध करते समय निर्यातक ने यह दर्शाने के लिए कि, ऐसोसिएशन ऑफ रिलेशनशिप के मद्देनजर आयात कीमत अविश्वसनीय है, कोई साक्ष्य या सूचना नहीं दी है। प्राधिकारी नोट करता है कि केवल

संबंध की मौजूदगी ही अपर्याप्त है। यह दर्शाया जाना चाहिए कि संबंधों के कारण निर्यात कीमत अविश्वसनीय है।

### घ.3.1 यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर) के लिए पाटन मार्जिन

#### घ.3.1.1 पर्सटार्प कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी के लिए सामान्य मूल्य

22. मै0 पर्सटार्प कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी ने ईयू बाजार में उत्पादन लागत और बिक्री कीमत को सामान्य मूल्य के रूप में विचारे जाने के लिए प्रदान किया है। मै0 पर्सटार्प कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी ने जॉचाधीन अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तुओं की \*\*\*मी.टन की कुल घरेलू बिक्री को ईयूआर के कुल बीजक मूल्य के लिए रिपोर्ट किया है। इस प्रकार, ईयूआर\*\*\*/मी.टन के रूप में आकलित प्रति यूनिट मूल्य अमरीकी डालर\*\*\*/मी.टन के समकक्ष बैठता है। बीमा, कमीशन, अन्तरदेशीय भाड़ा और साख की लागत के आधार पर समायोजन का दावा किया गया है। कम्पनी द्वारा प्रस्तुत की गई जानकारी का प्राधिकारी द्वारा सत्यापन कर लिया गया है और कम्पनी को सत्यापन रिपोर्ट जारी कर दी गई है। कम्पनी द्वारा प्रस्तुत टिप्पणियों पर प्राधिकारी द्वारा सामान्य मूल्य निर्धारण के लिए विचार कर लिया गया है। प्राधिकारी उक्त घरेलू बिक्री जानकारी को नियमों के अन्तर्गत संगत प्रावधानों के अनुसार सामान्य मूल्य का आधार के रूप में स्वीकार करता है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा जहाँ तक सामान्य मूल्य का संबंध है, समायोजन के रूप में दावा किए गए समायोजन का सत्यापन कर लिया है और उसे स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार फैक्टरी बाख स्तर पर सामान्य मूल्य का निर्धारण अमरीकी डालर\*\*\*/मी.टन के रूप में किया जाना प्रस्तावित है।

#### घ.3.1.2 गैर-सहकारी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

23. अन्य प्रत्युत्तरदाता निर्यातक, मै0 एरक्रास एस.ए, स्पैन एरक्रास द्वारा दर्ज प्रश्नावली उत्तर की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई और यह पाया कि कंपनी ने पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए व्यापक जानकारी प्रदान नहीं की है। उक्त निर्यातक ने केवल भारत में निर्यात बिक्री से संबंधित जानकारी ही दी है। विशेषकर कंपनी ने सामान्य मूल्य निर्धारण के संबंध में कोई जानकारी नहीं दी है। कंपनी को इस कमी की जानकारी दे दी गई थी और उसे उक्त जानकारी देने का सुझाव दिया गया था। तथापि, कंपनी ने संगत सूचना ना देना उचित समझा। प्राधिकारी यह नोट करता है कि प्रत्युत्तरदाता निर्यातक के लिए व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण केवल तभी किया जा सकता है जब

प्रत्युत्तरदाता निर्यातक प्राधिकारी के साथ पूर्ण सहयोग करे और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए सभी संगत जानकारी मुहैया कराए। सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के संबंध किसी जानकारी के अभाव में प्राधिकारी उक्त निर्यातक के लिए व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं कर सकता है। पूर्ण उत्तर के अभाव में मै0 एक्रास एस.ए. स्पेन को सहयोग न देने वाले के रूप में माना जा रहा है। फैक्टरी बाब्त सामान्य मूल्य का निर्धारण यूरोप के घरेलू बाजार में उत्पाद की कीमत के संबंध में उपलब्ध जानकारी के आधार पर किया गया है।

24. प्राधिकारी नोट करता है कि किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने वर्तमान जांच के संबंध में प्राधिकारी को कोई उत्तर नहीं दिया है। सहयोग न करने वाले निर्यातकों/उत्पादकों के लिए प्राधिकारी ने सहयोग देने वाले निर्यातक के समान स्तर पर ही अर्थात् अमरीकी डालर\*\*\*\*/मी.टन पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

#### **घ.3.2.1 पर्सटार्प केमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी के लिए निर्यात कीमत**

25. मै0 पर्सटार्प केमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी ने जांच की अवधि के दौरान \*\*\* मी.टन कुल निर्यात बिक्री जिसका कुल बीजक मूल्य डालर\*\*\*। इस प्रकार प्रति यूनिट मूल्य अमरीकी डालर\*\*\*\*/मी.टन बनता है। कंपनी द्वारा प्रस्तुत जानकारी का प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया और सत्यापन रिपोर्ट कंपनी को भेज दी गई। कंपनी द्वारा प्रस्तुत टिप्पणियों पर निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया। भारत को भारित औसत निर्यात कीमत(सीआईएफ) का निर्धारण निर्यातक को भेजी गई प्रश्नावली के प्रत्युत्तर के परिशिष्ट 3क में निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार अमरीकी डालर\*\*\*\*/मी.टन के रूप में निर्धारित करने का प्रस्ताव है। प्राधिकारी ने बीमा, कमीशन, भाड़ा और साख की लागत के संबंध में कीमत समायोजन के बाद निर्यात कीमत का निर्धारण किया। तदुसार फैक्टरी बाब्त स्तर पर निर्यात कीमत का अनन्तिम रूप से निर्धारण अमरीकी डालर\*\*\*\*/मी.टन के रूप में किया जाएगा जो सत्यापन के अध्यधीन है।

#### **घ.3.2.3 सहयोग न देने वाले निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत**

26. मै0 एक्रास एस.ए., स्पेन ने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की कुल \*\*\*मी.टन की निर्यात बिक्री की जानकारी दी है जिसका कुल बीजक मूल्य अमरीकी डालर\*\*\* है। तथापि, पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए पूर्ण प्रत्युत्तर न देने के कारण

प्राधिकारी ने इस निर्यातक को सहयोग न करने वाले निर्यातक के रूप में माना है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि ईयू (स्टीटन के अतिरिक्त) किसी अन्य निर्यातक ने निर्यातकों को भेजी गई प्रश्नावली का प्रत्युत्तर नहीं दिया है। इसलिए प्राधिकारी ने सहयोग करने वाले निर्यातकों का भारत को न्यूनतम निपल निर्यात कीमत अर्थात् अमरीकी डालर\*\*\*/मी.टन को मै० एरक्रास एस.ए., स्पेन सहित सहयोग न करने वाले निर्यातकों के लिए स्वीकार किया है।

27. उपर्युक्त के आधार पर निम्नलिखित पाटन मार्जिन निकाला गया:

#### पाटन मार्जिन की गणना

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य	निवत कीमत	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	
				अम.डा./मी.टन	रेज %
पर्सटार्प कैमिकल्स जीएमबीएच, जर्मनी	***	***	***	***	30-40
मै० एरक्रास एस.ए., स्पेन सहित सहयोग न करने वाले उत्पादक/निर्यातक	***	***	***	***	45-55

इ. क्षति निर्धारण का तरीका और क्षति एवं आकस्मिक संपर्क की जांच

इ.1 घरेलू उद्योग के विचार

28. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किया है:-

- संबद्ध भू भाग से समग्र रूप से आयातों में वृद्धि हुई है।
- संबद्ध भूभाग से निर्यातों के कारण पाटन कीमत अत्यधिक रही।
- अन्य स्रोतों से पाटित आयातों पर पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने के पश्चात घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री एवं क्षमता उपयोग में कुछ सुधार हुआ।

iv. वर्ष 2007-08 तक लाभ/हानि में सुधार प्रदर्शित हुआ और तब वर्ष 2008-09 में इसका पतन प्रारम्भ हो गया और यह इस सीमा तक हुआ कि जांच अवधि के दौरान इससे नुकसान होने लगा।

v. ब्याज एवं करों से पूर्व लाभ, नकद लाभ, निवेश पर आय में भी ऐसी ही प्रवृत्ति प्रदर्शित की।

vi. संबद्ध भूभाग से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में बाजार में काफी हद तक कमी हो हुई है।

vii. संबद्ध भूभाग से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को जांच की अवधि के दौरान अपनी कीमतें बहुत अधिक कम करने के लिए मज़बूर होना पड़ा। इस प्रकार आयातों से इस अवधि में कीमतों में हास हुआ।

viii. घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ। भुगतान किए जाने वाले वेतन में वृद्धि हुई।

ix. घरेलू उद्योग के इन्वेंटरी स्तर में गिरावट आई और फिर जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई।

x. घरेलू उद्योग ने कीमत पैरामीटरों अर्थात् नकद प्रवाह, निवेश से आय, लाभ आदि तथा बाजार हिस्से के रूप में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की। समग्र रूप से घरेलू उद्योग ने नकारात्मक वृद्धि का सामना किया।

xi. संबद्ध भूभाग से पाटित आयातों के मौजूदा अंतर्प्रवाह पर विचार करते हुए विदेशी उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की जा रही कीमत और आयातों एवं घरेलू उत्पादक के बीच कीमत अंतर के स्तर को ध्यान में रखते हुए संभावित वृद्धि अत्यधिक परिकल्पित है।

29. घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न पैरामीटर सामूहिक एवं संचयी रूप से यह स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को भौतिक क्षति हुई है।

ड.2 नियातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

30. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने क्षति और कारणात्मक संबंध से संबंधित निम्नलिखित मुद्दों को उठाया है:-

क) क्षति विश्लेषण के लिए घरेलू उद्योग को समग्र रूप में माना जाना चाहिए – प्राधिकारी को घरेलू उत्पादकों द्वारा चुनिंदा सहयोग की अनुमति नहीं देनी चाहिए। प्राधिकारी सभी याचिकाकर्ता कंपनियों को यह निर्देश दे कि तो पूर्ण विवरण

प्रस्तुत करें अथवा उन्हें सहयोग न करने वाले याचिकाकर्ताओं के रूप में मानें और केवल इस आधार पर जांच समाप्त कर दे।

ख) क्षति का दावा करते समय सभी अधिदेशित आर्थिक पैरामीटरों पर विचार नहीं किया गया है।

ग) याचिकाकर्ता द्वारा क्षति की मौजूदगी सिद्ध नहीं की गई है।

- i. बाजार हिस्सा – घरेलू उद्योग की क्षमता पर विचार करते हुए 32% बाजार हिस्सा प्राप्त करना संभावित है। इसकी तुलना में याचिकाकर्ता ने 36% बाजार हिस्सा प्राप्त कर लिया।
- ii. क्षमता, उत्पादन, बिक्री मात्रा, रोजगार, मजदूरी और पूँजी निवेश उगाहने की क्षमता में क्षति का कोई संकेत नहीं है। घरेलू उद्योग लगभग सभी क्षति पैरामीटरों में अनुकरणीय वृद्धि दर्शाती है। याचिकाकर्ता ने यह माना है कि घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग, घरेलू बिक्री में अनुकरणीय वृद्धि कर रहा है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग में रोजगार और वेतन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है तथा इसकी इन्वेंटरी में वास्तव में कमी आई है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने विशाखापट्टनम में एक नया संयंत्र शुरू किया है और इसके परियोजना को अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम द्वारा वित्तपोषित किया गया है जो यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग की पूँजी उगाहने की क्षमता में कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।
- iii. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि लाभ में गिरावट आई है। तथापि उनका यह दावा घरेलू उद्योग द्वारा दर्ज किए गए समग्र वृद्धि के अनुरूप नहीं है।
- iv. घरेलू उद्योग ने निर्यात बिक्री से हुई क्षति का कोई संकेत नहीं दिया है और यह नुकसान घरेलू बिक्री प्रचालनों के कारण हुआ है तथा इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू उद्योग द्वारा क्षति का दावा पूर्णतया निर्यात बिक्री के संबंध में हुई क्षति के कारण है। इसलिए, घरेलू उद्योग को क्षति निर्यात बिक्री से उचित हानि के कारण हुई है।
- v. प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि घरेलू उद्योग का विद्युत प्लांट 25 अगस्त, 2009 से 19 अक्टूबर, 2009 तक बंद पड़े रहने का प्रभाव इसके उत्पादन पर पड़ा और घरेलू उद्योग द्वारा दावाकृत क्षति हेतु

संबद्ध वस्तु की बिक्री को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

घ) प्रतिबादियों द्वारा कथित क्षति और आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

- i. प्राथिकारी ने आयातों से हुई क्षति के लिए पर्याप्त संरक्षण यहले ही प्रदाता करा दिया है।
- ii. अन्य तथ्यों में मेथनॉल की कीमतों में तीव्र वृद्धि शामिल है।
- iii. एसियन पेट्रस की कैपिटल प्रयोग के अतिरिक्त 2500 भी.टन की बेशी कीमता है। चूंकि पेट्रा उसका मुख्य दिग्जनेस नहीं है इसलिए बेशी उत्पादन न्यूलूलतम कीमत पर घरेलू बाजार में बेचता पड़ा। इसका आशय यह है कि कथित क्षति का एक भाग एक मन्य घरेलू उत्पादक द्वारा संबंधित दस्तु की कम कीमत पर बिक्री के कारण हुआ।
- iv. ईयू के अलावा, कई अन्य देशों से आयातों की लैंडेड कीमत ईयू से आयात कीमत की तुलना में बहुत कम है।
- v. चीन एवं ताइवान की कीमतों से जर्मन की कीमतें बहुत अधिक हैं और इन देशों से आयात की मात्रा भी बहुत अधिक है।
- vi. बाजार में कीमत अंतर यूरो मजबूत होने के कारण आया।

ड.) पर्सटार्प समूह द्वारा किए गए आयात से याचिकाकर्ता को क्षति नहीं हो रही है – प्रारंभ में पर्सटार्प इंडिया को बिक्री की गई वस्तुओं और उन्हें उपभोक्ताओं को पुनर्बिक्री करने से पर्सटार्प इंडिया की पुनर्बिक्री कीमत पर विचार किया जाना चाहिए न कि भारत में आयातों के लैंडेड मूल्य पर।

घ) पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना जनहित के खिलाफ है – घरेलू उद्योग 100% उपयोग के आधार पर कार्य कर रहा है। यह अन्तर्राष्ट्रीय रूप से प्रतिस्पर्धात्मक कीमत पर उपयोगकर्ता उद्योग की जरूरत को पूरा करने की स्थिति में नहीं होगा।

छ) घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तुओं के लिए उपयोगकर्ता उद्योग की मांग को पूरा नहीं कर सकता है।

ज) निर्दिष्ट प्राधिकारी वर्तमान जांच में अन्य देशों से आयात के कारण हुई क्षति को उत्तरदायी नहीं ठहरा सकता है। कम कीमत पर बिक्री का दावा अतिश्योक्तिपूर्ण है क्योंकि लगाई गई पूँजी पर 22% आय हो रही है। प्राधिकारी को चाहिए कि वह घरेलू उद्योग के विगत निष्पादन के आधार पर आय की दर का निर्धारण करें।

झ) याचिकाकर्ता की कीमत निर्धारण संबंधी सूचना में सह-उत्पादों से आय को शामिल नहीं किया गया है। सोडियम फार्मेट एक उप-उत्पाद है। सोडियम फार्मेट से हुए लाभ को शामिल करने के पश्चात् याचिकाकर्ता की वित्तीय स्थिति में कोई क्षति प्रदर्शित नहीं होगी।

ट) संबद्ध वस्तु की लागत निर्धारण – लागत लेखा परीक्षा रिपोर्ट और प्रतिसत्यापित आधार पर किया जाना चाहिए।

ठ) पेंटा के तकनीकी और नाइट्रेशन ग्रेडों के लिए पृथक मार्जिन का निर्धारण किया जाना चाहिए क्योंकि इनके उपयोग, इनकी लागत और कीमत में अन्तर है।

### ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

31. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत निवेदिनों पर विचार किया है। पाटनरोधी नियमों के अनुबंध II में उद्देश्य जांच के लिए (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार की कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव और (ख) इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर प्रणामी प्रभाव, दोनों का प्रावधान है। पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करते समय प्राधिकारी को यह जांच करनी पड़ती है कि क्या समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या उपभोग से संगत रूप में पाटित आयातों में वृद्धि का प्रभाव परिलक्षित हुआ है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करनी होती है कि क्या पाटित आयातों के द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में बहुत अधिक कटौती हुई है या क्या इन आयातों के प्रभाव से कीमतों में बहुत अधिक हास हुआ है या इससे कीमतों की वृद्धि रुकी है जोकि अन्यथा बहुत अधिक हो गई होती।

32. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध – 2 के पैरा 4 में उल्लेख है कि “संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के

प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्य और उद्योग की स्थिति जैसे बिक्री, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग, कीमत को प्रभावित करने वाले तथ्यों, पाटन के मार्जिन की मात्रा, अकदी प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव, इन्वेंटरीज, रोजगार, वेतन, वृद्धि, पूँजी निवेश उगाहने की क्षमता सहित पर प्रभाव डालने वाले तथ्यों का मूल्यांकन शामिल होगा।”

33. याचिकाकर्ता के उत्पादन का भारतीय उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है। याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है। एसियन पेंट्स द्वारा निर्धारित ढंग और प्रपत्र में कोई जानकारी नहीं दी गई है। पर्सटार्प इंडिया ने भी घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में कोई जानकारी प्रस्तुत नहीं की है। इस प्रकार, प्राधिकारी ने नियम 2(ख) के अनुसार प्रस्तावित निर्धारण के उद्देश्य के लिए याचिकाकर्ता को घरेलू उद्योग के रूप में माना है। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों और तथ्यों पर विचार करते हुए क्षति पैरामीटरों की वस्तुपरक जांच की है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करते समय विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में उठाए गए विभिन्न मुद्दों पर भी विचार किया गया।

### इ.3.1 पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव

34. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना चाहिए कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन अथवा उपभोग के संबंध में पर्याप्त वृद्धि हुई है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (ii) में प्रावधान है कि:

“ पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी विचार करेगा कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन या खपत के संबंध में पर्याप्त वृद्धि हुई है ”

### इ.3.2 मांग एवं बाजार हिस्से का आकलन

35. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मांग का निर्धारण, एसियन पेंट्स द्वारा कैषिटिव खपत को पृथक करके एवं शामिल करके दोनों तरह से विचार करने के पश्चात सभी स्रोतों से भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों और अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री, घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री के योग, के रूप में किया है। इस प्रकार आकलित मांग को अधोलिखित तालिका में दर्शाया गया है। यह देखा जा सकता है कि देश में उत्पाद की मांग में वर्ष 2008-09 में

गिरावट(जो मंदी के प्रभाव के कारण आई) आने के पश्चात् जांच की अवधि में वृद्धि हुई है।

मांग - मी.टन (कैप्टिव खपत को छोड़कर)	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत*
घरेलू उद्योग की बिक्री	5750	6117	5401	6778
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	7479	8342	5092	2056
ईयू(स्वीडन को छोड़कर) से आयात - संबद्ध भूभाग	256	2900	3575	6935
चीन और स्वीडन से आयात - एसएसआर	1296	1588	2496	903
ताइवान - एमटीआर से आयात	260	1252	247	2200
अन्य देशों से आयात	1428	1136	378	1771
कुल मांग	16469	21335	17189	20643
प्रवृत्ति	100	130	104	125
मांग - मी.टन (कैप्टिव खपत सहित)				
घरेलू उद्योग की बिक्री	5750	6117	5401	6778
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	10230	11219	7467	4480
ईयू(स्वीडन को छोड़कर) से आयात - संबद्ध भूभाग	256	2900	3575	6935
चीन और स्वीडन से आयात - एसएसआर	1296	1588	2496	903
ताइवान - एमटीआर से आयात	260	1252	247	2200
अन्य देशों से आयात	1428	1136	378	1771
कुल मांग	19220	24212	19564	23067
प्रवृत्ति	100	126	102	120

\*जांच अवधि= अप्रैल 09 - जून 10

कैप्टिव(%) को छोड़कर मांग में बाजार हिस्सा	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत*
घरेलू उद्योग	34.92	28.67	31.42	32.84
अन्य भारतीय उत्पादक	45.41	39.1	29.62	9.96
ईयू(स्वीडन को छोड़कर) से आयात - संबद्ध भूभाग	1.55	13.59	20.8	33.6
चीन और स्वीडन से आयात - एसएसआर	7.87	7.44	14.52	4.37
ताइवान - एमटीआर से आयात	1.58	5.87	1.44	10.66
अन्य देशों से आयात	8.67	5.32	2.2	8.58
कैप्टिव(%) को छोड़कर मांग में बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग	29.92	25.26	27.61	29.39
अन्य भारतीय उत्पादक	53.22	46.34	38.17	19.42
ईयू(स्वीडन को छोड़कर) से आयात - संबद्ध भूभाग	1.33	11.98	18.27	30.07
चीन और स्वीडन से आयात - एसएसआर	6.74	6.56	12.76	3.91
ताइवान - एमटीआर से आयात	1.35	5.17	1.26	9.54
अन्य देशों से आयात	7.43	4.69	1.93	7.68

\*जांच अवधि= अप्रैल 09 - जून 10

### ड. 3.3 आयात मात्रा एवं बाजार हिस्सा

36. प्राधिकारी यह नोट करता है कि क्षति जांच अवधि में ईयू(स्वीडन को छोड़कर) से आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वर्ष 2008-09 में घरेलू उद्योग की बिक्री में बहुत अधिक गिरावट आई जो मंदी के प्रभाव के कारण हुई और तत्पश्चात् जांच अवधि में वृद्धि हुई। क्षति अवधि के दौरान संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में बहुत अधिक बढ़ोत्तरी हुई। संबद्ध भूभाग से आयातों में भारत में उत्पादन और उपभोग के रूप में पर्याप्त वृद्धि हुई।

### उ.3.4 कीमत प्रभाव

37. पाटित आयातों का कीमत पर प्रभाव के संबंध में नियमावली के अनुबंध II(ii) में यह निर्धारित है कि:

“नियम 18 के उप नियम (2) में यथात्तिलिखित पाटित आयातों का कीमतों पर प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी इस बात पर विचार करेगा कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादन की कीमत की तुलना में कीमतों में बहुत अधिक कमी हुई है या इन आयातों का प्रभाव पर्याप्त हद तक कीमतों को अन्यथा प्रभावित करता है या कीमतों में वृद्धि होने से रोकता है जो आयात न होने की स्थिति में पर्याप्त रूप से हुई होती।”

38. पाटित आयातों का कीमत पर प्रभाव के संबंध में यह जांच की गई कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पर्याप्त रूप से कटौती हुई है या इन आयातों के प्रभाव के कारण कीमतों में पर्याप्त मात्रा में कमी हुई है अथवा कीमतों में वृद्धि होने में रुकावट पड़ी है जो अन्यथा पर्याप्त मात्रा में घटि होती। संबंधित उत्पाद की निर्यातित उत्पाद के लैंडिंग मूल्य और घरेलू बाजार में सभी छूटों और निवल करों के बाद घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत की व्यापार के समान स्तर पर तुलना की गई। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण फैक्टरी बाजी स्तर पर किया गया। यह तुलना दर्शाती है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध भूभाग में उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों की तुलना में बहुत अधिक कम कीमत पर बिक्री की गई। इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि आयातों से घरेलू कीमतों में कटौती हुई और कटौती का यह मार्जिन बहुत अधिक माना जाता है।

	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि
लैंडेड मूल्य	रु0/मी.टन	56,334	84,124	89,292	63,489
सूचीबद्ध		100	149	158	113
निवल बिक्री प्राप्तण	रु0/मी.टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	115	120	99
कीमत कटौती	रु0/मी.टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	(25)	(36)	46
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती	श्रृंखला	15-25%	नकारात्मक	नकारात्मक	5-15% ***
गैर-क्षतिकारी					
कीमत(एनआईपी)					

कम कीमत पर बिक्री					***
-------------------	--	--	--	--	-----

39. प्राधिकारी यह नोट करता है कि आयातों की लैंडेड कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत अधिक कम है। इस प्रकार, संबद्ध भूभाग से संबद्ध वस्तुओं के आयात के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में बहुत अधिक कमी आई। पुनः यह नोट किया जाता है कि आयातों की लैंडेड कीमत प्राधिकारी द्वारा निर्धारित घरेलू उद्योग की गैर-सरकारी कीमत से बहुत अधिक कम है। इस प्रकार आयातों का घरेलू उद्योग की बिक्री पर विपरीत प्रभाव पड़ा। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि गैर-क्षतिकारी कीमत निर्धारण के लिए इसने पूँजी पर 22% आय पर सतत विचार किया है। इसके अतिरिक्त यदि आय की कम दर(10%) की अनुमति दी जाती है तो भी कीमतों में कमी बहुत अधिक बनी रहती है।

40. इस तथ्य पर विचार करते हुए कि प्राधिकारी को पाटन एवं घरेलू उद्योग से परिणामी क्षति पर विचार करना अपेक्षित होता है और इस तथ्य पर विचार करते हुए कि दो निर्यातकों ने आंकड़े उपलब्ध कराए हैं। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालता है कि कीमत में कटौती और प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों के लिए क्षति मार्जिन का मूल्यांकन करना आवश्यक है। अधोलिखित तालिका तथ्यपरक स्थिति दर्शाती है। यह देखा जा सकता है कि प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा निर्यात से घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही थी और इन निर्यातों के संबंध में क्षति मार्जिन अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

	यूनिट	पर्सटॉप	सभी अन्य
गैर क्षतिकारी कीमत	अम.डा./मीटन	***	***
निवल बिक्री प्राप्ति	अम.डा./मीटन	***	***
लैंडेड कीमत	अम.डा./मीटन	***	***
कीमत अंडरकटिंग राशि	अम.डा./मीटन	***	***
कीमत अंडरकटिंग %	रेज %	10-15	15-20
क्षति मार्जिन	अम.डा./मीटन	***	***
एनआईपी का क्षति मार्जिन %	रेज %	30-40	40-50

### कीमत निश्चयण एवं हास

41. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या इन आयातों के प्रभाव से कीमतों में काफी हद तक कमी हो रही है या इससे कीमतों में वृद्धि में रुकावट आई जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक

बढ़ गई होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान उत्पादन की लागत और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत प्रवृत्तियों की तुलना की है।

विवरण	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि
बिक्री कीमत	रु0/मी.टन	***	***	***	***
आधार वर्ष से अंतर	सूचीबद्ध	100	94	108	104
बिक्री कीमत	रु0/मी.टन	***	***	***	***
आधार वर्ष से अंतर	सूचीबद्ध	100	115	119	99

42. घरेलू उद्योग का कीमत एवं लागत ढांचा तथा संबद्ध भूभाग से आयातों का लैंडेड मूल्य यह दर्शाता है कि वर्ष 2008-09 और जांच की अवधि के बीच लागत में 4% तक की गिरावट आई है(अर्थात् रु 0 \*\*\* प्रति मी.टन); जबकि उसी अवधि के दौरान निवल बिक्री प्राप्त में 20%(अर्थात् रु 0 \*\*\* प्रति मी.टन) की गिरावट आई। इसके अतिरिक्त, वह कीमत जिस पर भारतीय उत्पादकों द्वारा इस माल की बिक्री की जा रही है, निवेश पर पर्याप्त आय प्रदान नहीं करती है और यह घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत से कम है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालता है कि आयातों के कारण बाजार में उत्पादों की कीमत में अत्यधिक ह्रास हो रहा था।

### उ.3.3 घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मापदण्ड

43. नियमावली के अनुबंध II में यह अपेक्षित है कि क्षति के विश्लेषण में संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। इसके अतिरिक्त नियमावली के अनुबंध II(iv) में यह निर्धारित है कि:

“घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक कारकों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक या संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों, घरेलू उद्योग की कीमत को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजीनिवेश जुटाने की क्षमता पर

वास्तविक और संभावित कृष्णात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा।”

वास्तविक एवं संभावित उत्पादन, क्षमता एवं क्षमता उपयोग, बिक्री

44. क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा के बारे में घरेलू उद्योग की स्थिति निम्नानुसार है:

विवरण	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत
संस्थापित क्षमता	मी.टन	6,000	6,000	6,000	6,000
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	100
उत्पादन	मी.टन	6,267	6,284	6,175	6,437
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	99	103
क्षमता उपयोग	%	104	105	103	107
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	99	103
घरेलू बिक्री	मी.टन	5,750	6,117	5,401	6,778
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	94	118
कैप्टिव खपत सहित मांग	मी.टन	19,220	24,212	19,564	23,067
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	126	102	120

45. प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, घरेलू बिक्री और क्षमता उपयोग में वृद्धि दर्शाई गई है तथापि मांग में वृद्धि घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में हुई वृद्धि से अधिक है। इसके अतिरिक्त, उत्पादन में बढ़ोत्तरी के बावजूद घरेलू उद्योग से संबंधित घरेलू बिक्री और क्षमता उपयोग तथा कीमत मानदण्डों में पर्याप्त गिरावट आई है।

### लाभ, निवेश पर आय एवं नकदी प्रवाह

46. घरेलू उद्योग के लाभ, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह की निम्नवत जांच की गई है:

विवरण	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत
कर-पूर्व लाभ	रु0/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	4,831	2,445	(1005)
ब्याज एवं कर-पूर्व लाभ	रु0/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	1,031	553	(205)
लगाई गई पूँजी पर आय(एनएफए आधर)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	951	484	(131)
नकद लाभ	रु0/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	1,047	572	(121)
ब्याज एवं मूल्य हास-पूर्व लाभ	रु0/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	626	357	(67)

47. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा दावाकृत लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ के संबंध में दी गई जानकारी का सत्यापन किया है। उपर्युक्त आंकड़े प्रदर्शित करते हैं कि अन्य पाटित स्रोतों से आयातों पर पाठनरोधी शुल्क अधिरोपित करने के परिणामस्वरूप वर्ष 2007-08 में लाभदायकता में सुधार आया है। तथापि, वर्ष 2008-09 स्थिति में गिरावट आई और जांच की अवधि के दौरान यह स्थिति इस सीमा तक बिगड़ गई कि और अधिक नुकसान होने लगा। नकद लाभ एवं निवेश पर आय के बारे में भी इसी तरह की प्रवृत्ति पाई गई।

48. यह तर्क दिया गया कि घरेलू उद्योग को क्षति आंशिक रूप से मंदी के कारण भी हुई। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को वर्ष 2008-09 में लाभ हुआ जबकि जांच की अवधि के दौरान इसे वित्तीय क्षति हुई।

49. यह तर्क दिया गया कि घरेलू उद्योग को वित्तीय क्षति नए प्लांट में मूल्य हास के कारण उच्चतर कीमतों की वजह से हुई। तथापि, यह नोट किया जाता है कि नए संयंत्र के

मूल्य हास का वर्तमान उत्पाद से कोई संबंध नहीं है क्योंकि दोनों उत्पाद भिन्न उत्पाद हैं और कंपनी ने दोनों उत्पादों का पृथक रिकॉर्ड रखा है। इसके अतिरिक्त, यह पाया गया कि वर्षों तक प्रभारित मूल्य हास राशि जांच अवधि में नहीं बढ़ी है। सर्वोपरि यह नोट किया गया कि कर एवं मूल्य हास पूर्व लाभ में भी बहुत अधिक गिरावट आई है जिससे यह स्पष्ट होता है कि इन मापदण्डों में गिरावट ब्याज या मूल्य हास की उच्चतर घटना नहीं है।

50. इस दावे के संबंध में कि याचिकाकर्ता की लागत निर्धारण सूचना में उप-उत्पादों से प्राप्त आय को शामिल नहीं किया गया है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग से संबंधित जानकारी का सत्यापन कर लिया है और यह पाया है कि उप-उत्पादों से प्राप्त आय का लेखा विधिवत् रखा गया है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त साक्ष्य से यह स्थापित नहीं होता है कि उप-उत्पादों से प्राप्त आय को घरेलू उद्योग द्वारा समायोजित नहीं किया गया है।
51. इस दावे के संबंध में कि संबद्ध वस्तु का लागत निर्धारण लागत लेखा परीक्षा रिपोर्ट एवं प्रतिसत्यापन के आधर पर होना चाहिए, प्राधिकारी यह नोट करता है कि इसने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत जानकारी का सत्यापन कर लिया है और उसे प्रस्तावित निर्धारण के लिए स्वीकार कर लिया है।
52. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालता है कि घरेलू उद्योग की लाभदायकता में शुरुआत में प्रभाव पड़ा और तत्पश्चात् जांच की अवधि में इसमें एक बार पुनः गिरावट आई। यह नोट किया जाता है कि इस उत्पाद को अन्य स्रोतों से पाटित किया जाता रहा। प्राधिकारी ने ताइवान से पेन्टाइरायथिटॉल के आयात के संबंध में मध्यावधि समीक्षा जांच और चीन एवं स्वीडन से आयात के बारे में सन-सेट समीक्षा जांच कर ली है। प्राधिकारी ने इन जाँचों के अन्तिम निर्णय में यह निष्कर्ष निकाला कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में भारत में उत्पाद के पाठन के कारण गिरावट आई। इन जाँचों की जांच अवधि जनवरी-दिसंबर, 2009 थी। वर्तमान जांच अवधि में लाभ और निवेश पर परिणामी आय एवं नकदी प्रवाह में गिरावट ईयू से नवीन पाठन के कारण हुई है।

### रोजगार एवं वेतन

53. प्राधिकारी यह नोट करता है कि घरेलू उद्योग के संघटक बहु-उत्पाद, बहु-स्थान कंपनी हैं और, अतः घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में पाठन का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ा। घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर एवं वेतन की स्थिति अधोलिखित तालिका में दर्शाई गई है:

विवरण	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत
रोजगार(मानव शक्ति संख्या)	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	112	114
वेतन	रु0/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	116	128	149
लाभ एवं हानि	रु0/मी.टन	***	***	***	***
विगत वर्ष की तुलना में वृद्धि/कमी	रु0/मी.टन	***	***	***	***
वेतन एवं मजदूरी	रु0/मी.टन	***	***	***	***
विगत वर्ष की तुलना में वृद्धि/कमी	रु0/मी.टन	***	***	***	***

54. हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया कि घरेलू उद्योग द्वारा भुगतान किए गए वेतन में असाधारण वृद्धि दर्शाई गई है। अतः प्राधिकारी ने वेतन के संबंध में किए गए दावे और इस तथ्य का कि क्या वेतन में बढ़ोतरी से घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट हुई है, की जांच की। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने घरेलू बाजार में पेन्टाइरायथ्रिटॉल के उत्पादन के बारे में प्रभारित वेतन की सूचना दी है। यूकि कंपनी का विगत में अन्यथिक निर्यात होता था, जिसमें अब कमी आ गई और घरेलू उत्पाद के लिए प्रभारित वेतन में उस सीमा तक वृद्धि हुई। यह भी नोट किया जाता है कि वेतन में बढ़ोतरी के कारण उत्पादन लागत में रु0 \*\*\* प्रति मी.टन की वृद्धि हुई जबकि घरेलू उद्योग की लाभदायकता में लगभग रु.\*\*\*मी.टन की दर से गिरावट आई। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि लाभदायकता में कमी वेतन के कारण लागत में वृद्धि से अननुपातिक है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालता है कि लाभदायकता में दावाकृत गिरावट प्राथमिकतः कीमतों में तीव्र कमी के कारण आई और न कि वेतन में किसी संभावित असाधारण वृद्धि के कारण।

उत्पादकता

55. घरेलू उद्योग की उत्पादकता अधोलिखित तालिका में दर्शाई गई है:

विवरण	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत
उत्पादकता प्रति कर्मचारी	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	88	90
उत्पादकता प्रति दिन	मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	99	103

56. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह नोट करता है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वर्ष 2007-08 और 2008-09 में गिरावट आई परन्तु जांच की अवधि में इसमें कुछ सुधार हुआ। तथापि, जांच की अवधि में प्रति कर्मचारी उत्पादकता स्तर, हालांकि यह 2008-09 से बेहतर था, वर्ष 2006-07 के उत्पादकता स्तर से कम था।

मालसूची

57. निदिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर की जांच की जो अधोलिखित तालिका में दी गई है:

विवरण	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत
औसत भण्डार	मी.टन	627	150	246	267
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	24	39	43

58. उपर्युक्त के आधार पर प्राधिकारी यह नोट करता है कि घरेलू उद्योग की माल सूची के स्तर में 2007-08 में गिरावट आई और फिर 2008-09 तथा जांच अवधि में इसमें वृद्धि हुई। वास्तव में, घरेलू उद्योग का माल-सूची स्तर महत्वपूर्ण बना रहा और माल सूची का औसत स्तर बढ़ा। घरेलू उद्योग द्वारा यह प्रस्तुत किया गया कि वे माल सूची का उच्च भण्डार रखने में सक्षम हैं और वे इसे किसी भी कीमत पर बाजार में बिक्री कर सकते हैं।

## घरेलू कीमत पर प्रभाव डालने वाले कारक

59. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी से इस तथ्य पर विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में कीमतों में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती। घरेलू बाजार पर आयातों के प्रभाव का आकलन करने के उद्देश्य से निर्दिष्ट प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान आयात कीमत का विश्लेषण किया और पाया कि जांच की अवधि में संबद्ध भू-भाग से आयातों का प्रति मी.टन लैंडेड मूल्य निवल बिक्री कीमत और गैर-क्षतिकारी कीमत की तुलना में बहुत कम है। घरेलू बाजार में कीमतों पर प्रभाव डालने वाले पाटित आयातों के अतिरिक्त अन्य तथ्यों का विश्लेषण करने के लिए घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा के कारण लागत ढाँचे में परिवर्तन और प्रतिस्पर्धी प्रतिस्थापकों की कीमत की जांच की गई है। प्राधिकारी अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इस उत्पाद का कोई अर्थक्षम प्रतिस्थापक नहीं है और कीमतों पर पाटित कीमतों के कारण प्रभाव पड़ा।

60. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने बिक्री कीमत, कर एवं शुल्कों के अतिरिक्त, छूट, डिस्काउंट और भाड़ा एवं परिवहन पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण किया। आयातों की लैंडेड कीमत का निर्धारण 1% लैंडिंग प्रभार सहित भारित औसत सीआईएफ आयात कीमत और लागू आधारभूत सीमाशुल्क पर विचार करते हुए किया। निवल बिक्री प्राप्ति एवं आयातों की लैंडेड कीमत के बीच तुलना की गई। प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि संबद्ध देश से आयातों का लैंडेड मूल्य जांच की अवधि के दौरान संबंधित वस्तु के लिए घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना में कम था और तद्द्वारा घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती हुई।

61. कम कीमत पर बिक्री क्षति आकलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है और इस प्रकार प्राधिकारी ने कम कीमत पर बिक्री सीमा का निर्धारण करने के लिए एक गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया और उसकी लैंडेड कीमत से तुलना की। घरेलू उद्योग के लिए गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण जांच की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए उत्पादन लागत पर विचार करते हुए किया गया। प्राधिकारी ने पाया कि जांच की अवधि में आयातों का प्रति मी.टन लैंडेड मूल्य संबद्ध देश के बारे में जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित गैर-क्षतिकारी कीमत से बहुत अधिक कम हैं।

## वृद्धि

62. घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मापदण्डों की जांच करने पर प्राधिकारी ने यह पाया कि उत्पादन और बिक्री जैसे मात्रागत मापदण्डों में वृद्धि प्रदर्शित हुई है, फिर भी घरेलू उद्योग के विभिन्न कीमत मापदण्डों में नकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाई गई है जो अन्य पाटित स्रोतों के विरुद्ध प्रभावी पाटनरोधी शुल्क के बावजूद हुई और अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला कि घरेलू उद्योग की परिणामी वृद्धि नकारात्मक बनी रही।

### पूँजी उगाहने की क्षमता

63. घरेलू उद्योग एक बहु-उत्पाद कंपनी है। इस मामले में और अधिक निवेश उगाहने की क्षमता महत्वपूर्ण कारक नहीं है। तथापि, यदि वर्तमान स्रोत से पाटन जारी रहा तो पूँजी उगाहने की घरेलू उद्योग की क्षमता बुरी तरह से प्रभावित होगी।

### भौतिक क्षति के संबंध में निष्कर्ष

64. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया कि घरेलू उद्योग को कोई भौतिक क्षति नहीं हुई है जो उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री में हुए सुधार से स्पष्ट होता है। यह भी तर्क दिया गया कि यदि घरेलू उद्योग पूर्ण क्षमता में होता तब भी बाजार हिस्से में सुधार नहीं कर पाता और घरेलू उद्योग को पहले ही पर्याप्त संरक्षण दिया जा चुका है। यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति मिथनॉल की कीमतों में तीव्र वृद्धि के कारण हुई है। यह भी तर्क दिया गया कि अन्य देशों से आयातों की लैंडेड कीमत संबद्ध देशों से आयात की लैंडेड कीमत से कम है। इन हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया कि पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना जनहित में नहीं होगा।

65. प्राधिकारी यह नोट करता है कि नियम में यह प्रावधान नहीं है कि घरेलू उद्योग को प्रत्येक क्षति मापदंड के रूप में भौतिक क्षति होनी चाहिए। नियम के अन्तर्गत क्षति का निर्धारण करने के लिए (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमत पर पाटित आयातों का प्रभाव और (ख) इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव, की उद्देश्यपरक जांच की जानी चाहिए। रिकॉर्ड में उपलब्ध जानकारी यह दर्शाती है कि पाटित आयातों में समग्र रूप से और भारत में उत्पादन या खपत के संगत रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में कीमत में अत्यधिक कमी की गई है और प्रत्येक पाटित आयात के प्रभाव के कारण कीमतों में काफी हद तक गिरावट आई है। घरेलू

उद्योग पर पाठित आयातों का परिणामी प्रभाव एक या अधिक आर्थिक मापदंड से परिलक्षित होता है। प्राधिकारी ने कानून के अन्तर्गत सूचीबद्ध विभिन्न आर्थिक मापदंडों के विश्लेषण पर विचार करते हुए पाठित आयातों के परिणामी प्रभाव की जांच की है।

66. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों, प्रदान कराई गई जानकारी और किए गए आत्म-निवेदनों और हितबद्ध पक्षकारों की प्रस्तुतियों के ज़रिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों अथवा उपर्युक्त निष्कर्षों में अन्यथा यथाअभिलेखित को ध्यान में रखते हुए और मौजूदा क्षति की स्थिति का उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:

- i) आधार वर्ष में संबद्ध वस्तु की मांग 100(सूची) थी जो जांच की अवधि के दौरान बढ़कर 120(सूची) हो गई, अर्थात् इसमें 20% की बढ़ोतरी हुई। उसी अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातों में 27 गुना बढ़ोतरी हुई। यह देखा जाता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयात में समग्र रूप से और भारत में उत्पादन एवं खपत के संबंध में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- ii) भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु का पाठित कीमत पर प्रवेश हो रहा है और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों का पाठन मार्जिन बहुत अधिक और न्यूनतम स्तर से ज्यादा है।
- iii) संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कीमतों में अत्यधिक कटौती करनी पड़ रही है। इसके अतिरिक्त, जबकि उत्पादन लागत और बिक्री कीमत दोनों में गिरावट आई है फिर भी बिक्री कीमत में गिरावट उत्पादन लागत में आई गिरावट से ज्यादा है। इस प्रकार आयात घरेलू कीमतों का ह्रास कर रहे हैं।
- iv) आयातों में अत्यधिक वृद्धि और आयातित एवं घरेलू उत्पाद की कीमतों में अत्यधिक अंतर से घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ के रूप में गिरावट आई है। चालू अवधि के दौरान निष्पादन में गिरावट बहुत अधिक एवं भौतिक है।
- v) हालांकि घरेलू उद्योग बिक्री मात्रा को बढ़ाने में सक्षम रहा परन्तु यह वर्तमान स्रोत से बाजार में पाठित आयातों की उपस्थिति के मद्देनजर न्यूनतम कीमत लागत पर जारी रखा गया।
- vi) हालांकि घरेलू उद्योग के उत्पादन, उत्पादकता और क्षमता उपयोग में गिरावट नहीं आई तथापि लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ में गिरावट यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों का परिणामी विपरीत प्रभाव पड़ा।

vii) रोजगार, वेतन, मालसूची जैसे मानदंडों का पाटित आयातों के विपरीत प्रभाव की तुलना में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

viii) पाटित मार्जिन काफी महत्वपूर्ण है और कीमत भिन्नता से यह स्पष्ट सुझाव भिन्नता है कि घरेलू उद्योग पर पाटित उत्पादों का विपरीत परिणामी प्रभाव रहा।

67. उपर्युक्त विश्लेषण यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को भौतिक क्षति हुई है।

च. कारणात्मक संबंध

68. पाटनरोधी नियमों के अनुसार प्राधिकारी को, अन्य बातों के साथ-साथ, पाटित आयातों के अतिरिक्त किसी अन्य ज्ञात कारक, जिसका घरेलू उद्योग पर क्षतिकारी प्रभाव हो, की जांच करना भी अपेक्षित होता ताकि इन अन्य कारकों द्वारा कारित क्षति के लिए पाटित आयातों को उत्तरदायी न ठहराया जा सके। इस संबंध में संगत कारकों में, अन्य बातों के साथ-साथ, शामिल हैं उन आयातों की मात्रा एवं कीमत जिनकी बिक्री पाटित कीमत पर नहीं की गई, मांग में कमी अथवा खपत पद्धति में परिवर्तन, व्यापार निबंधक प्रक्रियाएं और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, तकनीकी विकास और घरेलू उद्योग की उत्पादकता एवं निर्यात निष्पादन।

69. यह जांच की गई कि पाटनरोधी नियमावली के अन्तर्गत सूचीबद्ध इन अन्य मानदंडों का घरेलू उद्योग को क्षति में कोई योगदान है। यह पाया गया कि:

क. तृतीय देशों से आयात: प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान ईयू(स्वीडन को छोड़कर) और अन्य देशों (चीन, स्वीडन और ताइवान) जिनके विरुद्ध पहले भी जांच का निष्कर्ष निकाला गया था और सऊदी अरब(जिसके खिलाफ घरेलू उद्योग ने यह दावा करते हुए एक याचिका प्रस्तुत की कि वह भी पाटित आयात हैं और यह याचिका प्राधिकारी के समक्ष विचाराधीन है) से न्यूनतम सीमा से अधिक आयात हुए। यह नहीं पाया गया कि आयातों की उस मात्रा का, जिसकी बिक्री पाटित कीमत पर नहीं की गई, घरेलू उद्योग पर विपरीत परिणामी प्रभाव रहा।

ख. मांग में कमी: प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में वर्ष 2008-09 में गिरावट आई और फिर जांच की वृद्धि के दौरान इसमें वृद्धि हुई। मांग में कमी पर उस तथ्य के रूप में विचार नहीं किया जा सकता है कि इससे घरेलू उद्योग पर विपरीत प्रभाव पड़ा होगा। यह नोट किया जाता है कि क्षति की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की समग्र मांग में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है, जैसाकि अधोलिखित तालिका से स्पष्ट

होता है:

विवरण	यूनिट	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि वार्षिकीकृत
कैप्टिव को छोड़कर कुल मांग	मी.टन	16,469	21,335	17,189	20,643
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	130	104	125
कैप्टिव को शामिल करते हुए कुल मांग	मी.टन	19,220	24,212	19,564	23,067
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	126	102	120

ग. खपत की पद्धति: खपत की पद्धति में किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन की जानकारी प्राप्तिकारी के संज्ञान में नहीं आई और न ही किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध कोई प्रस्तुतीकरण किया।

घ. प्रतिस्पर्धा की शर्तें: संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात करने योग्य हैं और घरेलू बाजार में इन पर कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया नहीं हैं। घरेलू उद्योग एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करता है और साथ ही संबद्ध वस्तु की लैंडेड कीमत के साथ भी प्रतिस्पर्धा करता है। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से आयातों की भारतीय बाजार में अत्यधिक उपस्थिति है।

ड. प्रौद्योगिकी विकास: अब तक की गई जांच से यह प्रदर्शित नहीं होता है कि तकनीकी में ऐसा कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

च. घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन: जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का निर्यात केवल 20 मीट्रिक टन का था और यह उनके उत्पादन का 1% से भी कम है। इसके अतिरिक्त, इस अवधि में घरेलू उद्योग के निर्यात में बहुत अधिक गिरावट आई है। घरेलू प्रचालनों के लिए क्षति की जानकारी को पृथक रखा गया है और घरेलू उद्योग के केवल घरेलू प्रचालनों के संबंध में निष्पादन जैसे लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ आदि पर ही विचार किया गया है। अतः चालू जांच अवधि के दौरान निर्यातों से इसके समग्र निष्पादन पर लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ में कमी के संबंध में कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा।

छ. इस दावे के संबंध में कि पर्सटार्प समूह द्वारा किए गए आयातों से याचिकाकर्ता को कोई क्षति नहीं हुई, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पर्सटार्प ने न तो यह दावा किया और न ही यह सिद्ध किया कि संबंध संगम के कारण निर्यात कीमतें अविश्वसनीय हैं। अतः ऐसी स्थिति में जहां निर्यातक यह सिद्ध करता है कि संबंधों के कारण निर्यात कीमत अविश्वसनीय है, वहां पाटित मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए सीआईएफ निर्यात कीमत पर विचार किया जाना अपेक्षित होता है। प्राधिकारी ने वैसा ही किया है।

70. यह निर्धारण करने के लिए कि इन आयातों का मूल्य हास पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है अथवा इसने कीमतों में वृद्धि होने में रुकावट डाली है जो अन्यथा काफी हट तक बढ़ गई होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान उत्पादन लागत और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में प्रवृत्तियों की तुलना की है।

71. कोई अन्य ऐसा तथ्य जिससे घरेलू उद्योग को संभावित क्षति होती, प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सूचीबद्ध अन्य जात कारक घरेलू उद्योग को क्षति प्रदर्शित नहीं करते हैं फिर भी निम्नलिखित मानदंड यह प्रदर्शित करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण क्षति हुई है:

- संबद्ध वस्तु भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रही है और संबद्ध स्रोतों से संबद्ध वस्तु के आयात का पाटन मार्जिन बहुत अधिक है और यह न्यून स्तर से ज्यादा है।
- संबद्ध आयात घरेलू उद्योग से न्यूनतर कीमत पर उपलब्ध हैं। परिणामस्वरूप उपभोक्ता आयातों की तरफ दौड़ रहा है और घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें कम करने के लिए बाध्य कर रहा है। घरेलू उद्योग में आया कीमत हास पाटित आयातों के कारण ही हुआ है।
- हालांकि घरेलू उद्योग बिक्री मात्रा में वृद्धि करने में सक्षम रहा तथापि बाजार में पाटित आयातों की मौजूदगी के मद्देनजर यह कीमतों में कटौती करके हासिल किया गया।
- आयात न्यून एवं पाटित कीमतों पर हो रहे हैं और इनसे घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को कीमतें कम करने के लिए बाध्य किया

गया जिससे लाभ, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में विपरीत प्रभाव पड़ा है।

v) आयातों से घरेलू कीमतों में कमी हो रही है। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को बाजार में लागत में गिरावट से कहीं अधिक कीमत गिरावट का सामना करना पड़ रहा है।

72. प्राधिकारी का विचार है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण भौतिक क्षति हुई है।

#### छ. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

73. इस दावे के संबंध में कि पेंटा की लागत और कीमत तथा इसके विभिन्न अनुप्रयोगों के कारण तकनीकी और नाइट्रेशन ग्रेड के लिए पृथक मार्जिन का निर्धारण किया जाना चाहिए, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि तकनीकी और नाइट्रेशन ग्रेड पेन्टाइरायश्रिटॉल केवल दो भिन्न ग्रेड हैं। पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण विचाराधीन उत्पाद के संबंध में किया जाना अपेक्षित है। दोनों उत्पादों की लागत और कीमत में अन्तर का आशय यह नहीं है कि प्राधिकारी को अलग-अलग पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण करना चाहिए।

74. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत के संबंध में घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तु की गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया है। क्षति का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत की संबद्ध आयातों के लैंडेड मूल्य से तुलना की गई है। क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है:

	यूनिट	परस्टार्प	सभी अन्य
एनआईपी	अम.डा./मी.टन	***	***
पहुंच कीमत	अम.डा./मी.टन	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डा./मी.टन	***	***
क्षति मार्जिन एनआईपी % के रूप में	रेंज %	30-40	40-50

## प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतीकरण

### 75. घरेलू उद्योग द्वारा प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतीकरण

- i. यह उत्पाद दो ग्रेडों - टेक्निकल और नाइट्रेशन में बेचा जाता है। तथापि, इन अन्तरों के बावजूद विचाराधीन उत्पाद की लागत एवं कीमत एक समान हैं। तथापि ग्रेडों के भेद के बावजूद उत्पाद का दायरा वही बना रहता है।
- ii. याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है और याचिकाकर्ता या इससे संबंधित पक्षकार द्वारा आयातों की अल्प अमाहत्वपूर्ण मात्रा के होते हुए उसका प्रस्तुत याचिका दायर करने का आधार बनता।
- iii. कम्पनी द्वारा संबद्ध देशों से किए गए अत्यधिक आयातों को देखते हुए एशियन पेन्ट्स को घरेलू उद्योग के रूप में नहीं माना जा सकता है। किसी भी हाल में, एशियन पेन्ट्स की कैपिटल खपत पर विचार नहीं किया जा सकता है।
- iv. प्राधिकारी ने इक्रास के प्रत्युत्तर को इस आधार पर सही ही नामंजूर कर दिया कि निर्यातिक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को पूरा सहयोग नहीं दिया है।
- v. पर्सटार्प ने घरेलू उद्योग द्वारा निर्धारित सामान्य मूल्य की प्रमात्रा पर विवाद किया। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन यह स्थापित करता है कि पाटन मार्जिन वास्तव में महत्वपूर्ण है।
- vi. घरेलू उद्योग क्षति के संबंध में अपने प्रस्तुतीकरण को अधोलिखित ढंग से पुनः दोहराता है:
  - क. सम्बद्ध देश से आयातों में समग्र रूप से एवं भारत में उत्पादन एवं खपत के संबंध में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
  - ख. आयात से घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कमी हो रही है।
  - ग. इस अप्डरकटिंग से बाजार में कीमत हास हुआ है।
  - घ. आयातों में अत्यधिक वृद्धि और आयातित एवं घरेलू उत्पाद में कीमत अन्तराल के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन में जाँच की अवधि के दौरान

बाजार हिस्सा, लाभ, निवेश से अर्जन नकदी प्रवाह और माल सूची के रूप में अत्यधिक गिरावट आई है।

- ड. चालू अवधि के दौरान यह गिरावट अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं भौतिक है।
- च. भौतिक क्षति के अतिरिक्त मामले के तथ्य यह स्पष्ट स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के द्वारा भौतिक क्षति की चुनौती मिल रही है।

vii. पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश अमरीकी डालर में निर्धारित मात्रा में होनी चाहिए।

#### 76. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतीकरण

- i) प्रस्तुतीकरण के लिए केवल पांच दिन दिए गए, इसी अवधि में ईस्टर का त्यौहार भी था और इसलिए यूरोपियन पक्षकारों को दिया गया वास्तविक समय पांच दिन से भी कम था और अतः टिप्पणियों के लिए दिया गया समय तर्कसंगत नहीं ठहराया जा सकता।
- ii) जांचकर्ता प्राधिकारी क्षति विश्लेषण करते समय विश्वसनीय आंकड़ों को नामंजूर नहीं कर सकता है जैसाकि डीजीसीआईएण्डएस आंकड़ों को अस्वीकार करके और याचिकाकर्ता द्वारा यथा प्राविधिक आईबीआईएस आंकड़े केवल इस आधार पर प्रदान करना कि यह उच्चतर मात्रा को प्रदर्शित करता है, जिससे यह घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति की मौजूदगी दर्शाने के लिए उद्देश्य को बेहतर ढंग से पूरा करता है।
- iii) आर्थिक संकट के दौरान हुई कोई क्षति व्यापार सम्बंधी क्षति की संकेतक नहीं होती है और इसलिए जाँच प्राधिकारी द्वारा यह उल्लेख करना असंगत है कि इस आर्थिक संकट के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में नकारात्मक प्रवृत्तियाँ हुईं।
- iv) घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा केवल 2007-08 की अवधि में अर्थात आर्थिक संकट के दौरान ही कम हुआ है। ईयू आयातों का बाजार हिस्सा उतना ही बढ़ा जितनी अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। परस्टार्प इण्डिया ने अपने भारतीय उत्पादन को गैर-भारतीय उत्पादन से प्रतिस्थापित कर दिया जिससे ईयू के समग्र बाजार हिस्से में जबरदस्त बढ़ोत्तरी हुई और अतः केवल शुल्क का अधिरोपण करने के लिए इस मामले की शुरुआत करना

न्यायोचित नहीं है।

- v) क्षति विश्लेषण भी उद्देश्यपरक नहीं है क्योंकि प्राधिकारी द्वारा क्षति का निर्धारण करने की अवधि और पाटन आंकलन की च्वाइस संगत नहीं है। पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन की गणना करने के लिए जॉच की अवधि से अधिकांश आंकड़ों का प्रयोग किया गया परन्तु तब यह आंकलन 'जॉच की अवधि और पिछले तीन वर्षों' के दौरान के आंकड़ों के आधार पर कुछ लागत तत्वों के लिए किया गया। इससे गणना में अनिवार्यतः विकृति आई होगी।
- vi) घरेलू उद्योग पर विपरीत कीमत प्रभाव नहीं है। कनोडिया कैमिकल्स ने वर्ष 2009-10 में अपनी कुल बिक्री के 63% की आपूर्ति एशियन पेन्ट्स लिमिटेड को की और अप्रैल 2010 – जून, 2010 की अवधि में इसने अपने कुल उत्पादन के लगभग 89% की बिक्री एशियन पेन्ट्स को की। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एशियन पेन्ट्स ने कनोडिया कैमिकल्स से पेन्टा का जिन कीमतों पर अधिप्रापण किया वह घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत है। जॉच की अवधि के दौरान कनोडिया कैमिकल्स की एशियन पेन्ट्स को औसत बिक्री कीमत में वर्ष 2009-10 की तुलना में 0.3% की गिरावट आई। यह माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा लिए गए इस निष्कर्ष से बिल्कुल विपरीत है कि बिक्री मात्रा में वृद्धि घरेलू उद्योग की उप-इष्टतम कीमत के कारण आई।
- vii) आयातकों ने माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह आश्वासन भी दिया कि किसी भी सत्यापन की स्थिति में उपर्युक्त लेन-देन के वातचर एशियन पेन्ट्स द्वारा उपलब्ध करा दिए जाएंगे। तथापि, आयातकों को सत्यापन करने के संबंध में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी से कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ और न ही माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी आयातकों के इस दावे का प्रकटन रिपोर्ट में कोई हल निकाला।
- viii) कीमतों में कटौती करने का विश्लेषण तथ्यों पर आधारित नहीं है क्योंकि कनोडिया कैमिकल्स ने जॉच की अवधि के दौरान अपने उत्पादन के लगभग 70% की बिक्री एशियन पेन्ट्स लिमिटेड को की, एशियन पेन्ट्स को कनोडिया कैमिकल्स द्वारा बिक्री कीमत को घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमत के रूप में माना जा सकता है। एशियन पेन्ट्स लिमिटेड द्वारा प्रदान कराए गए आंकड़ों के अनुसार घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और आयात कीमत में अन्तर 8% से भी कम है और यह माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निकाले गए निष्कर्ष के अनुसार

10-15% कम है।

- ix) माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निष्कर्ष निकाला है कि जाँच की अवधि के दौरान घरेलू बिक्री कीमत में वर्ष 2008-09 की तुलना में 20% की गिरावट आई है। वर्तमान जाँच में जाँच की अवधि 15 माह है। इस प्रकार घरेलू उद्योग के मुताबिक सूचीबद्ध घरेलू बिक्री कीमत वर्ष 2009-10 और जाँच अवधि दोनों के लिए समान है। तथापि वह कीमत जिस पर कनोडिया कैमिकल्स ने जाँच की अवधि के दौरान एशियन पेन्ट्स लिमिटेड को सप्लाई, कनोडिया की एशियन पेन्ट्स को कुल 70% बिक्री पर विचार करते हुए, बढ़ने की प्रवृत्ति दर्शाती है।
- x) घरेलू उद्योग को उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से के रूप में भौतिक क्षति नहीं हो रही है।
- xi) आयातकों ने अपने आत्म निवेदनों में यह प्रस्तुत किया है कि लाभ में गिरावट घरेलू उद्योग द्वारा एक नए संयंत्र पर होने वाले व्यय के कारण आई जबकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निष्कर्ष निकाला कि 'यह तर्क दिया गया कि घरेलू उद्योग को वित्तीय क्षति मूल्यहासं के कारण नए संयंत्र की उच्चतर लागत के कारण आई। तथापि यह नोट किया जाता है कि नए संयंत्र के मूल्यहास का मौजूदा उत्पाद से कोई संबंध नहीं है क्योंकि दोनों उत्पाद अलग-अलग उत्पाद हैं और कम्पनी ने दोनों उत्पादों का पृथक रिकॉर्ड रखा है।' तथापि, न्यूज रिपोर्ट के अनुसार घरेलू उद्योग ने पीयूसी का उत्पादन नवस्थापित संयंत्र से करने की योजना बनाई। इस प्रकार हम माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी से इस आधार पर अपना निष्कर्ष निकालने का अनुरोध करते हैं कि क्या विजाग स्थित नया संयंत्र पीयूसी का उत्पादन कर रहा है या कोई अन्य उत्पाद बना रहा है।
- xii) निर्दिष्ट प्राधिकारी के इस निष्कर्ष के विपरीत कि मालसूची के स्तर में वृद्धि हुई है, घरेलू उद्योग की पेन्टाइरायथ्रिटाल संबंधी मालसूची में कमी आई है। घरेलू उद्योग की वित्त वर्ष 2010-11 की वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक पेन्टाइरायथ्रिटाल का 1 अप्रैल 2009 को ओपनिंग स्टॉक 497 मी.टन था जो 31 मार्च, 2010 को कम होकर 228 मी.टन हो गया और फिर यह 31 मार्च, 2011 को पुनः घटकर 61 मी.टन रह गया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की मालसूची का स्तर न्यून है।

xiii) यह आकलन कि घरेलू उद्योग को प्रतिवर्ष पूँजी पर निर्धारित आय होनी चाहिए, स्विट्पूर्ण है और यह मुक्त बाजार के सभी मानदण्डों के विपरीत है क्योंकि यह घरेलू उद्योग को कृत्रिम जोखिम मुक्त माहौल प्रदान कराने की मांग करता है। माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को कम्पनी की विगत आय पर विचार करना चाहिए।

xiv) क्षति का गैर-पार्थक्य करने से कारणात्मक संबंध टूट जाते हैं क्योंकि इससे यह स्थापित नहीं हो पाता है कि जाँच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा यथादावाकृत भौतिक क्षति केवल सम्बद्ध देश से पीयूसी के कारण हुई, न कि किसी अन्य स्रोत से।

## 77. प्राधिकारी द्वारा जाँच

घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की प्राधिकारी द्वारा उस सीमा तक जाँच की गई जिस सीमा तक उन्हें मौजूदा जाँच के संगत पाया गया:

- i) जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग पर विपरीत कीमत प्रभाव नहीं है, प्राधिकारी यह नोट करता है कि रिकॉर्ड में उपलब्ध जानकारी स्पष्टतः यह दर्शाती है कि कीमत में अत्यधिक कटौती की गई। यह भी स्पष्टतः सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को कीमत हास का सामना करना पड़ा। इस संबंध में दिए गए सभी तर्क तथ्यपरक ढंग से सही नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, जहाँ तक वर्ष 2009-10 की जाँच की अवधि के साथ तुलना करने का संबंध है, यह नोट किया जा सकता है कि जाँच की अवधि में सम्पूर्ण 2009-10 और उसके बाद के तीन माह शामिल हैं। अतः यह तुलना भामक है। प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण के लिए हर मामले में वर्ष 2006-07, 2007-08, 2008-09 और जाँच की अवधि पर विचार किया है। युनिंदा ढंग से तुलना करना उपयुक्त नहीं होगा।
- ii) जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि सत्यापन के लिए कोई पत्राचार प्राप्त नहीं हुआ, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँचकी शुरुआत 11 जनवरी, 2010 को की गई थी। एक वर्ष से अधिक की अवधि के दौरान एशियन पेन्ट्स ने न तो कभी जानकारी प्रदान कराई और न ही इसकी जानकारी के लिए सत्यापन प्रस्तुत किया। उन्होंने सुनवाई पश्चात लिखित प्रस्तुतीकरण के स्तर पर ही अपना प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया। अब भी कम्पनी ने न तो याचिका का स्पष्ट समर्थन किया और न ही याचिका का विरोध किया। तथापि, ऐसा प्रतीत होता है कि

कम्पनी बड़ी चतुराई से पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने का विरोध करती है।

- iii) जहाँ तक जाँच की अवधि के पश्चात कीभतों में वृद्धि होने का प्रश्न है, प्राधिकारी का यह सतत प्रयास रहा है कि पाटन एवं क्षति-विश्लेषण जाँच अवधि के लिए उपलब्ध जानकारी के आधार पर किया जाए। तथापि, यह इंगित कर देना संगत होगा कि घरेलू उद्योग ने सऊदी अरेबिया के संबंध में याचिका दायर की है जिसमें कम्पनी ने उस जाँच अवधि में क्षति का दावा किया है। उस मामले की जाँच अवधि भौजूदा मामले की जाँच अवधि के उपरान्त की है। अतः, प्रथम दृष्टया यह प्रतीत नहीं होता है कि घरेलू उद्योग को अब कोई क्षति नहीं हो रही है।
- iv) आईपीए के इस दावे के संबंध में कि याचिकाकर्ता ने पीयूसी का उत्पादन विजाग स्थित अपने नए संयंत्र से करना शुरू कर दिया है, परन्तु इस नई जगह से पेन्टाइराइश्टिल का उत्पादन शुरू होने का रिकॉर्ड नहीं है। कम्पनी ने सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान उसी स्तर की क्षमता को दर्शाया है, जो अगर कम्पनी ने अपने नए स्थान पर अतिरिक्त क्षमता की स्थापना कर ली हो तो यह सत्य नहीं हो सकता है। हर हाल में प्राधिकारी यह नोट करता है कि केवल पेन्टाइराइश्टिल के संबंध में जानकारी पर ही विचार किया गया जिसका जाँचकर्ता दल द्वारा सत्यापन भी किया गया।
- v) याचिकाकर्ता की मालसूची स्तर में गिरावट के संबंध में आईपीए के दावे के बारे में वर्ष 2010-11 वह अवधि है जिस पर विचार किया गया है। तथापि पीओआई अप्रैल 2010 से जून 2011 थी।
- vi) जहाँ तक अन्य पाटित स्रोतों से क्षति का संबंध है नियमों में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पाटित न किए गए आयातों से घरेलू उद्योग द्वारा सहन किए गए नुकसान को पृथक करे। घरेलू उद्योग द्वारा अन्य पाटित आयातों से सहन की गई क्षति का कानून के अन्तर्गत पृथक्करण करना अपेक्षित नहीं माना जाता है।
- vii) जहाँ तक आय की दर का प्रश्न है, प्राधिकारी ने प्रथमतः लगाई गई पूँजी पर 22% की आय पर विचार किया था। द्वितीयतः किसी उत्पाद की विगत अवधि वह अवधि है जब घरेलू उद्योग को अन्य पाटित आयातों से क्षति हो रही थी। अतः,

किसी भी मामले में विगत क्षति अवधि लगाई गई पूँजी पर तर्कसंगत आय की दर का निर्धारण करने के लिए एक बैंचमार्क नहीं बन सकती है।

viii) जहाँ तक मात्रा मापदण्डों के बारे में क्षति का संबंध है, कानूनी स्थिति बहुत स्पष्ट है। कानून के अन्तर्गत सूचीबद्ध एक या एक से अधिक पैरामीटरों के अनुसार पाठित आयातों के परिणामी विपरीत प्रभाव स्थापित किया जा सकता है। यह जरूरी नहीं है कि घरेलू उद्योग को सभी क्षति पैरामीटरों के संबंध में क्षति होनी चाहिए।

ix) समय सीमा के संबंध में यह नोट किया जाता है कि भारत के माननीय उच्च न्यायालयों द्वारा इस निर्णय के मद्देनजर कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को कानून के अन्तर्गत ऐसी स्थिति में स्वविवेक का प्रयोग करने का अधिकार नहीं है, जहाँ किसी घरेलू उत्पादक ने उत्पाद का आयात किया है अथवा वह आयातक/निर्यातक से संबंधित है, इस महत्वपूर्ण समय का कोई मूल्य नहीं रहता है। माननीय उच्च न्यायालयों के यह निर्णय अन्य उत्पादों के बारे में होते हुए और मौजूदा मामले के बारे में सीधे सीधे इनका कोई संबंध न होते हुए भी यह निर्णय मौजूदा मामले पर प्रत्यक्षतः लागू होता है और निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए यह उपयुक्त नहीं होगा कि वह उक्त निर्णय की अनदेखी कर दे और अपना निष्कर्ष जारी कर दे। यह नोट किया जाता है कि माननीय कलकत्ता उच्च न्यायालय ने 19 अगस्त, 2011 को संगत आदेश जारी किए जिसे माननीय डिवीजन बैंच द्वारा 23 दिसम्बर, 2011 के स्थगन आदेश द्वारा स्थगित कर दिया गया। इसके अतिरिक्त, माननीय मद्रास उच्च न्यायालय ने 21 नवम्बर, 2011 को संगत आदेश जारी किए जिसे माननीय डिवीजन बैंच द्वारा 2 फरवरी, 2012 को स्थगित कर दिया गया। अतः यह देखा जा सकता है कि प्राधिकारी को उपलब्ध समय सीमा को न्यायालय के उक्त आदेशों द्वारा अत्यधिक कम करना पड़ा। इसके अतिरिक्त, इस मामले के तथ्यपरक पहलू के आधार पर हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ केवल पुनावृत्तिकारक हैं।

x) जहाँ तक डीजीसीआईएण्डएस आयात आंकड़ों को नामंजूर किए जाने के संबंध में तर्क है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआईएंडएस में एचएस कोड के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई है जबकि आईबीआईएस ने विशिष्ट विवरण के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई है, इससे यह स्पष्ट होता है कि डीजीसीआईएण्डएस आंकड़ों में संगत अवधि के दौरान रिपोर्ट किए गए आयातों की मात्रा को व्यापक

ढंग से शामिल नहीं किया गया है। ऐसी स्थिति में जहाँ डीजीसीआईएण्डएस में प्रदर्शित आयात की मात्रा आईबीआईएस आंकड़ों से यह पाया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात की सूचना विचाराधीन उत्पाद के लिए निर्धारित वर्गीकरण से अतिरिक्त किसी वर्गीकरण के अन्तर्गत दी गई है तो प्राधिकारी की यह अविरोध स्थिति रही है कि वह अवधि के दौरान आयात के सही मामले पर विचार करें।

- xi) जहाँ तक आर्थिक संकट के संबंध में दिए गए तर्क का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि आर्थिक संकट की कथित स्थिति एक विश्वव्यापी स्थिति थी और इससे घरेलू और निर्यात कीमतों पर समान रूप से प्रभाव पड़ना चाहिए। तथापि, यह नोट किया जाता है कि सम्बद्ध देश के निर्यातकों ने अत्यधिक महत्वपूर्ण पाटित कीमतों पर उत्पाद का निर्यात किया।
- xii) जहाँ तक पर्सटार्प द्वारा भारत से इसके विदेशी संयंत्र के उत्पादन के प्रतिस्थापन का संबंध है, प्राधिकारी यह विचार करता है कि तथ्यों से यह स्पष्टतः सिद्ध हो जाता है कि निर्यात पाटित कीमतों पर किए गए थे और आयातों की लैण्डिंग कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम थी। निर्यातक दस्तावेजी साक्ष्य से यह स्पष्ट नहीं कर सका कि इससे संबंधित संबद्ध संगम के कारण इसकी आस्ति की निर्यात कीमत अविश्वसनीय थी। चूंकि निर्यातक ही यह सिद्ध नहीं कर पाया कि निर्यात कीमत विश्वास योग्य नहीं थी, इसलिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना किसी पत्तन पर आयातों की लैण्डिंग कीमत के साथ करने की संगत प्रक्रिया का अनुसरण किया। ऐसा केवल उस स्थिति में ही होता है जहाँ निर्यातक यह सिद्ध कर देता है कि संबंधों के कारण निर्यात कीमत अविश्वसनीय है और निर्दिष्ट प्राधिकारी को भारतीय आयातक की पुनर्बिक्री कीमत पर विचार करने की जरूरत है। जहाँ तक बाजार हिस्से का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करता है कि पाटित आयातों का परिणामी विपरीत प्रभाव; लाभ, लगाई गई पूँजी पर आय और नकदी प्रवाह में अत्यधिक गिरावट के रूप में स्पष्टतः परिलक्षित होता है।
- xiii) यह स्पष्ट किया जाता है कि क्षति त्रिलेखण के उद्देश्य के लिए प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन पर विचार किया है। इसके अतिरिक्त, लाभ, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह का निर्धारण संगत अवधि के लिए

उत्पादन लागत और बिक्री राजस्व पर विचार करते हुए किया गया है। प्राधिकारी ने क्षति आकलन की विभिन्न अवधि से संबंधित लागत एवं कीमत आंकड़ों पर विचार नहीं किया है।

- xiv) जहाँ तक घरेलू उद्योग को अस्थायी प्रकृति की क्षति का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ऐसी कोई वैधानिक अपेक्षा नहीं है कि घरेलू उद्योग को सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान क्षति हुई हो। प्राधिकारी को केवल इस तथ्य पर विचार करने की जरूरत होती है कि क्षति अवधि के निष्पादन पर विचार करते हुए क्या घरेलू उद्योग का निष्पादन जाँच अवधि के दौरान क्षतिकारण के रूप में विचारा जा सकता है।
- xv) प्राधिकारी यह नोट करता है कि विचाराधीन उत्पाद का विगत अवधि में पाटन कीमतों पर अन्य स्रोतों से निर्यात किया जा रहा था। अतः घरेलू उद्योग द्वारा क्षति अवधि के दौरान अर्जित आय पर विचार करना उपयुक्त नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी ने गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने के उद्देश्य से लगाई गई पूँजी पर 22% आय की संगत प्रक्रिया को स्वीकार किया है।
- xvi) जहाँ तक सऊदी अरेबिया से आयात का संबंध है, घरेलू उद्योग ने इन आयातों से संबंधित एक याचिका दायर की है और यह मामला निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन है। नियमानुसार प्राधिकारी को पाटित न किए गए आयातों से हुई क्षति को पृथक कर देना चाहिए। घरेलू उद्योग द्वारा अन्य पाटित आयातों से हुई क्षति को पृथक करने की जरूरत नहीं होती है। यह संगत कानूनी प्रावधान, जिसका सार अधोलिखित है, से स्पष्टतः सिद्ध होता है:

यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि पाटित आयात पैराग्राफ (ii) और (iv) में यथाउलिखित पाटन के प्रभाव के कारण हुए हैं जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच स्थापित कारणात्मक संबंध का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संगत जाँच पर आधारित होना चाहिए। निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों के अतिरिक्त किसी अन्य जात कारक की भी जाँच करेगा जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही हो और इन अन्य कारकों द्वारा कारित क्षति के लिए पाटित आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जाएगा। इस संबंध में

जिन तथ्यों को संगत मानाजा सकता है उनमें शामिल हैं, उन आयातों की मात्रा और कीमत जिनकी बिक्री पाटित कीमतों पर नहीं की गई, मांग में संकुचन अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन, विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा और व्यापार प्रतिबंध, तकनीक में विकास और निर्यात निष्पादन तथा घरेलू उद्योग की उत्पादकता।

- xvii) इस दावे के संबंध में कि जॉच पूरी करने के लिए समय सीमा बढ़ाने संबंधी वित्त मंत्रालय की अधिसूचनाउपलब्ध नहीं थी, प्राधिकारी यह नोट करता है कि सम्बद्ध जॉच की मौखिक सुनवाई की सूचना देने के लिए परिचालित पत्र में स्पष्ट निर्धारित था कि जॉच पूरी करने की तारीख 10 अप्रैल, 2010 होगी।
- xviii) जहाँ तक घरेलू उद्योग द्वारा क्षति आंकड़ों में परिवर्तन किए जाने का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने क्षति आंकड़ों में कोई संशोधन नहीं किया। घरेलू उद्योग द्वारा वेतन एवं मजदूरी संबंधी कुछ आंकड़ों के संबंध में स्पष्टीकरण दिया गया था जिसे वार्षिकीकृत नहीं किया गया।
- xix) जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि सम्बद्ध वस्तु की एशियन पेन्ट्स द्वारा की गई बिक्री से प्रतिस्पर्धा के कारण हुई क्षति पर विचार नहीं किया गया है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता विचाराधीन उत्पाद की एशियन पेन्ट्स को स्वयं भारी मात्रा में आपूर्ति करते हैं। ऐसा होते हुए, एशियन पेन्ट्स के साथ प्रतिस्पर्धा को घरेलू उद्योग को क्षति कारित करने वाला प्रधान कारण नहीं कहा जा सकता है।
- xx) इस प्रस्तुतीकरण के बारे में कि आयात अनिवार्य हो गए थे, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कानून का यह एक सुस्थापित सिद्धान्त है कि विचाराधीन उत्पाद संबंधी मांग आपूर्ति अन्तराल पूर्णतया असंगत है, क्योंकि मांग-आपूर्ति अन्तराल पाठन को न्यायोचित नहीं ठहराता है।

## 78. निष्कर्ष एवं सिफारिशें

हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए प्रस्तुतीकरणों और उन पर उठाए गए मुद्दों की जॉच करने और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का सम्बद्ध देश भारत में इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर आयात किया गया जिससे कि इस उत्पाद का पाठन हुआ। सम्बद्ध वस्तु

के संबंध में घरेलू उद्योग को क्षति हुई। यह भौतिक क्षति सम्बद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।

### भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

79. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का सामान्य उद्देश्य है घरेलू उद्योग को पाटन की अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं द्वारा होने वाली क्षति का उपशमन करना ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं पक्षपातपूर्ण रहित स्थिति पुनर्स्थापित की जा सके जो देश के आम हित में होती है। पाटनरोधी उपाय अधिरोपित करने से सम्बद्ध देश से आयात प्रतिबंधित नहीं हो जाते हैं जिससे उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
80. यह माना गया कि पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने से सम्बद्ध वस्तु का प्रयोग करते हुए विनिर्दित उत्पाद(उत्पादों) का कीमत स्तर प्रभावित होगा और परिणामतः इन उत्पादों की तत्संबंधी प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित होगी। तथापि, पाटनरोधी उपाय करने, खासकर पाटनरोधी शुल्क की वसूली उस निश्चित राशि तक प्रतिबंधित कर दी जाए जो घरेलू उद्योग की क्षति का निराकरण करने के लिए आवश्यक हो तो भारतीय बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने से पाटन प्रक्रिया द्वारा अर्जित अनुचित लाभ समाप्त हो जाएगा, जिससे घरेलू उद्योग में आने वाले पतन से बचा जा सकता है और इससे सम्बद्ध वस्तु के उपभोक्ता को व्यापक च्वाइस की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलेगी।

### सिफारिशें

81. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस जॉच की शुरुआत की गई और इसे सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था तथा आयातकों, निर्यातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के सभी पहलुओं पर सकारात्मक जानकारी प्रदान कराने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया। पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की पाटन नियमों के अनुसार जॉच प्रारम्भ करने और आयोजित करने तथा इन पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को पहुँचाई जा रही भौतिक क्षति एवं सकारात्मक पाटन मार्जिन सिद्ध हो जाने पर, प्राधिकारी का विचार है कि पाटन एवं परिणामी क्षति को दूर करने के लिए निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना आवश्यक है। अतः प्राधिकारी सम्बद्ध वस्तु का सम्बद्ध देश से यहाँ उल्लिखित इसके सभी फार्मों एवं तरीकों से आयातों पर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना आवश्यक समझते हैं और उसकी सिफारिश करते हैं।

82. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए न्यूनतर शुल्क नियम के संबंध में, प्राधिकारी पाटन के मार्जिन और क्षति मार्जिन के न्यूनतर के समरूप निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर किया जा सके। तदुसार यूरोपियन यूनियन (स्वीडन के सिवाय) में उत्पादित या वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर, केन्द्र सरकार द्वारा जारी की गई अधिसूचना कीतारीख से अधोलिखित तालिका के काँलम 8 में विनिर्धारित राशि के अनुरूप निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश की जाती है।

### शुल्क तालिका

क्र.सं.	शीर्षक/ उप- शीर्षक	वस्तु विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	मापन की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	2905.42	पेन्टाइरायथिटॉल	कोई	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	मै. पर्सटार्प कैमिकल्स जीएमबीएच	मै. पर्सटार्प कैमिकल्स जीएमबीएच	379	मी. टन	अम. डॉ.
2.	2905.42	पेन्टाइरायथिटॉल	कोई	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	मै. पर्सटार्प कैमिकल्स जीएमबीएच	कोई	490	मी. टन	अम. डॉ.
3.	2905.42	पेन्टाइरायथिटॉल	कोई	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	कोई	कोई	490	मी. टन	अम. डॉ.
4.	2905.42	पेन्टाइरायथिटॉल	कोई	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	कोई	कोई	490	मी. टन	अम. डॉ.
5.	2905.42	पेन्टाइरायथिटॉल	कोई	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	यूरोपियन यूनियन (स्वीडन को छोड़कर)	कोई	कोई	490	मी. टन	अम. डॉ.

83. इस अधिसूचना के उद्देश्यों के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962(1962 का 52) के अन्तर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलनीय मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अन्तर्गत शुल्कों के अतिरिक्त सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

84. केन्द्र सरकार के इस आदेश के विरुद्ध सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद कर और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष अपील की जा सकती है।

विजय लक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट ग्राधिकारी

### **MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**

**(Department of Commerce)**

**(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)**

#### **NOTIFICATION**

New Delhi, the 10th April, 2012

**(Final Findings)**

**Subject:** Anti Dumping Investigation concerning import of Pentaerythritol originating in or exported from the European Union (excluding Sweden).

**No. 14/43/2010-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter also referred to as the Rules or the AD Rules);

#### **A. PROCEDURE FOLLOWED IN THE INVESTIGATION**

1. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:
  - i) The Designated Authority under the above mentioned Rules (hereinafter also referred to as the Authority), received an application filed by M/s Kanoria Chemicals & Industries Ltd., Ankleshwar (Gujarat) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Pentaerythritol (hereinafter also referred to as Penta or the subject goods) originating in or exported from European Union (excluding Sweden) (hereinafter also referred to as the subject territory).
  - ii) The Authority, on the basis of prima facie evidence submitted by the Applicant to justify initiation of the investigation, decided to initiate the investigation against imports of the subject goods from the subject territory.
  - iii) The Authority, in accordance with sub-Rule 5(5) of the AD Rules, notified to the Delegation of the European Union to India about the receipt of information alleging dumping of the subject goods from the subject territory before proceeding to initiate the investigation.

- iv) The Authority issued a public notice No 14/43/2010-DGAD dated 11<sup>th</sup> January, 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods from the subject territory.
- v) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters whose details were made available by the Applicant and the industry associations and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
- vi) The Authority also forwarded a copy of the public notice to all the known importers of the subject goods in India from the subject territory and advised them to submit their views in writing within forty days from the date of issuance of the letter.
- vii) The Authority provided a copy of the non-confidential version of application to the known exporters and the Delegation of the European Union to India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules. A copy of the Application was also provided to other interested parties, wherever requested.
- viii) The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in the subject territory in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.No.	Name of Company	Country
1.	M/s. POLIOLI (SPA)	Italy
2.	M/s. ERCROS S.A.	Spain
3.	M/s. PETROCHEM CARLESS LTD.	UK
4.	M/s. PERSTORP OXO BELGIUM AB	Belgium
5.	M/s. PERSTORP CHEMICALS GMBH	Germany

- ix) In response to the Initiation Notification, M/s. Perstorp Chemicals GmbH, Germany, and M/s. Ercros S.A., Spain, responded.
- x) Questionnaires were sent to the following known importers / users of subject goods in India, calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

SN	Name of Company	SN	Name of Company
1.	M/s. Vibgyor Paints Pvt. Ltd., Mumbai	17.	M/s. H.R. Trading Co., Pvt. Ltd., Mumbai
2.	M/s. Sanman Trade Impex Pvt. Ltd., Mumbai	18.	M/s. Leo Chemoplast Pvt., Ltd., Mumbai
3.	M/s. Saraf Chemicals Ltd., Mumbai	19.	M/s. Samir Dye Chem. Mumbai
4.	M/s. Alcon Enterprises, Kolkata	20.	M/s. Berger Paints India Ltd., Mumbai
5.	M/s. A.V.M. Sales Pvt. Ltd., Kolkata	21.	M/s. Century Inka Limited, Mumbai
6.	M/s. Ciba Speciality Chemicals (India) Ltd., Mumbai	22.	M/s. Addison Paints & Chemicals, Chennai
7.	M/s. Decro Paints, Hyderabad	23.	M/s. Coates of India Ltd., Mumbai
8.	M/s. Dujodwala Paper Chemicals Ltd., Raigad	24.	M/s. Hardcastle & WaulMafg. Co., Ltd., Mumbai
9.	M/s. Gargi Industries Prop. Navi	25.	M/s. GoodlassNerolac Paints

	Mumbai		Ltd., Mumbai
10.	M/s. Mitsu Industries Ltd., Mumbai	26.	M/s. Hero Dye Chem Industries, Mumbai
11.	M/s. Resins & Pigmenhts, Pithampur (MP)	27.	M/s. Hindustan Inks & Resins Ltd., Mumbai
12.	M/s. ChemiColour Agency, Kolkata	28.	M/s. IVP Ltd., Thane
13.	M/s. Shalimar Paints Ltd., Hawra	29.	M/s. Jenson & Nicholson (I) Ltd., Kolkata
14.	M/s. Dujodwala Paper Chemicals, Mumbai	30.	M/s. Paras Dyes & Chemicals, Mumbai
15.	M/s. Eastcorp International, Kolkata	31.	M/s. Perstorp Aegies Chemicals Pvt. Ltd., Valsad
16.	M/s. Garware Polyester Ltd., Mumbai	32.	M/s Goodlass Nerolac Paint Ltd., Mumbai

xi) In response to the Initiation Notification, M/s. Perstorp Chemicals India Pvt. Ltd., Berger Paints India Ltd.; Kansai Nerolac Paints Ltd. and Indian Paint Association have responded.

xii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

xiii) Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.

xiv) Investigation was carried out for the Period of Investigation (POI) starting from 1<sup>st</sup> April 2009 to 30<sup>th</sup> June 2010 (POI). However, injury examination was conducted for a period from 2006-07, 2007-08, 2008-09 and the POI.

xv) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange the details of imports of subject goods for the period of investigation and the preceding three years. However, DGCI&S data has not been relied upon in this investigation as the volumes reflected by IBIS information provided by the petitioner are higher than DGCI&S. It has been submitted by the domestic industry that IBIS reports the information by item description and covers the product under consideration reported under other classifications as well.

xvi) Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain as to whether the anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury to the Domestic Industry.

xvii) The Authority held an Oral Hearing on 7th March, 2012 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance with Rule 6(6). The parties who attended the oral hearing were advised to file written submissions of the information presented orally. The

interested parties were allowed to present rebuttal arguments/rejoinders on the views/information presented by other interested parties. The Designated Authority has considered submissions received from various interested parties appropriately.

xviii) Arguments raised and information provided by various interested parties during the course of the investigation, to the extent the same are supported with evidence and considered relevant to the present investigation, have been appropriately considered by the Authority.

xix) \*\*\* in this Final Findings Notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

## **B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE**

### **B.1 Views of the domestic industry**

2. Following issues were raised by the domestic industry with regard to the product under consideration and like article:

(i) Pentaerythritol falls under the category of Organic Chemicals, produced in white crystalline powder form, and is classified under Chapter Heading 2905.42 of the Customs Tariff Act. It falls under ITC HS Classification 2905 4200.

(ii) Pentaerythritol can be produced using electrodialysis separation technology or fractional crystallization technology. There is no difference, however, in the product properties produced through the two technologies. Pentaerythritol produced can be of technical grade or nitration grade. The principal difference in the two grades is in purity, crystal size and uniformity of crystals. Other than this, there is no other material difference between Technical Grade Pentaerythritol and Nitration Grade Pentaerythritol. Both the grades are produced out of the same process. In fact, it is only a matter of gradation, after production and at the stage of analytical testing of the product. Pentaerythritol having purity above 98% and better crystal formation can be used in the explosive industry and therefore, this grade has been designated as "Nitration Grade" in commercial parlance. Production process, however, largely results in production of "Technical Grade". Less than 2% production results in nitration grade whereas the production of Di-pentaerythritol is less than 0.5%. More than 97% production is of technical grade. Further, imports are primarily in technical grade.

(iii) A major portion of Pentaerythritol is used in the manufacture of alkyd resins, esters and ether derivatives and nitro-derivatives. Derivatives (e.g. esters, ethers, alkyd resins) are used as drying agent in paint, varnishes and other surface coating industries. In recent years, derivatives are used as lubricant in various industries. The product is mostly used in the manufacture of Alkyd Resins, Resin Esters, Plasticizers, Printing inks, Synthetic rubber, Stabilizers for plastics, Modified drying oils, Detonators, Explosives, Pharmaceuticals, Core oils and Synthetic lubricants, etc.

(iv) There is no difference in Pentaerythritol produced by the domestic industry and imported from the subject territory. Pentaerythritol produced by the domestic industry and imported from the subject territory are comparable in terms of physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology (followed by most of the producers the world over), functions and uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the two interchangeably. Pentaerythritol produced by the petitioners and imported from subject territory is like article.

(v) Di-Pentaerythritol and Pentaerythritol are two different kinds of products. Di-Pentaerythritol is beyond the scope of the product under consideration.

#### **B.2 Views of the Importers, Consumers, Exporters and Other Interested Parties**

3. The exporters have made the following submissions with regard to the product under consideration and like article:

(i) The petitioner has stated in the petition that 'Di-Pentaerythritol' is beyond the scope of the product under consideration. However, the petitioner has also stated that given the volume of imports of nitration grade and production by the petitioner, the fact that complete information on imports of the two grades is not publicly available (the names of the importers are also being truncated by the data providing agencies, including DGCI&S) and its likely impact on the eventual dumping margin and injury, petitioner has provided information combined for the two grades at this stage- both in respect of imports & dumping margin and its own performance.

(ii) Thus, it is clear from this that the petitioner has included in the data information relating to products that are not within the scope of the product under investigation for evaluating imports, dumping margin, material injury including price undercutting, price underselling, etc and causal link. Thus, inclusion of products falling outside the scope of subject goods would lead to incorrect determination of dumping, material injury and causal link. Such data shall not be relied upon. For this reason also, the petition should have been rejected.

#### **B.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY**

4. Product under consideration in the present investigations is Pentaerythritol, an organic compound which finds application in manufacture of Alkyd Resin, Rosin Esters, Plasticizers, Printing Inks, Synthetic Rubber, Stabilizers for Plastics, Modified Drying Oils, Detonators, Explosives, Pharmaceuticals, Core Oils and Synthetic Lubricants etc. Pentaerythritol can be of Technical grade or Nitration grade and both the grades are included within the scope of product under consideration and the present investigation. Pentaerythritol is classified

under Customs sub-heading No. 2905.42 under chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975. However, the Customs as well as the ITC HS classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

5. Rule 2(d) of the Anti-dumping Rule specifies that like article means an article, which is identical and alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling that of the article under examination.
6. The petitioner claimed that the goods produced by them are like articles to the goods originating in or exported from the subject territory. The Authority notes that Pentaerythritol produced by the domestic industry has characteristics which are similar to those of Pentaerythritol imported from the subject territory. In view of the above, the Authority holds that Pentaerythritol produced by the domestic industry and that being imported from the subject territory are like articles within the meaning of the AD Rules. The Authority also notes that the production process largely results in production of "Technical Grade", and less than 2% production results in Nitration grade, whereas the production of Di-penta is less than 0.5%. Di-pentaerythritol is, therefore, beyond the scope of the present investigation.
7. It has been argued that the petitioner has included data information relating to products that are not within the scope of the product under investigation for evaluating imports, dumping margin, material injury including price undercutting, price underselling, etc and causal link. Thus, inclusion of products falling outside the scope of subject goods has led to incorrect determination of dumping, material injury and causal link. It is, however, noted that the petitioner has included information only with regard to product under consideration. Technical and nitration grade are two different grades of the product under consideration. Nitration grade is not beyond the scope of the product under consideration. Therefore, combined information for nitration grade and technical grades for the purpose of dumping and injury analysis in the petition does not imply inclusion of data relating to products beyond the scope of the product under consideration.

### C. STANDING OF THE DOMESTIC INDUSTRY

#### C.1 Views of the Domestic Industry

8. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to the standing of the domestic industry:
  - a. The petition was filed by M/s. Kanoria Chemicals & Industries Ltd., Ankleshwar, Gujarat. There are two other companies in India who created capacity for production of Pentaerythritol, namely, M/s Asian Paints (India) Ltd. and M/s Perstorp Chemicals India (P) Ltd.
  - b. While Asian Paints primarily produces for captive purposes, the company sells some material in the market also. Petitioner has separately considered production of Asian Paints to such an extent. Further, Perstorp India also produces the subject goods. However, it has started importing the subject goods in significant volumes. The imports by Perstorp India are significant in volume. In fact, as per

c. petitioner's knowledge, Perstorp has completely switched over to imports and closed production in the POI.  
 In view of the above, petitioner considers that both Perstorp and Asian Paints cannot be considered as eligible producer of the subject goods in the Country.

d. Further, petitioner has shown production of Asian Paints separately as captive production and merchant production. Petitioner has considered merchant production of this company for the purpose of determination of standing to file the present petition, even though the petitioner believes that it would be appropriate to exclude whole of the production of Asian Paints, on the grounds that the company is producing the product substantially for its own requirement, it would be seen that the production of petitioner alone is more than 25% of merchant production in the Country. It is evident that the petitioner satisfies the standing to file the present petition.

e. The petitioner has established that production of petitioner constitutes a major proportion in Indian Production (both after including and excluding captive consumption by Asian Paints) and, therefore, petitioner should be treated as "domestic industry" within the meaning of the Rules.

#### **C.2 Views of the Exporter, Importers, Consumers and Other Interested Parties**

9. The exporters and consumers have made the following submissions with regard to the standing of the domestic industry:

- i. Asian Paints Ltd is also an eligible domestic producer for product concerned in the domestic market. Captive producers cannot be excluded from the scope of the domestic industry.
- ii. The petitioner has stated that Asian Paints Ltd cannot be considered as eligible domestic producers as it is a captive producer and sells only limited quantity of the subject goods in the merchant market. Captive producers cannot be excluded from the definition of the domestic industry merely because they chose not to sell their full production in the domestic market but to use it for making some other down-stream product.
- iii. Imports by Perstorp are primarily from Germany and should be excluded.

#### **C.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY**

10. M/s. Kanoria Chemicals and Industries Limited have filed the application. It is a multi product company and is involved in production of number of products. The applicant has imported small volume of the subject goods from Spain directly in 2008-09 and through related company in 2009-10. The volume of imports is quite low as compared to total imports of the product, production by the domestic industry and consumption in India. The Authority holds that the volume of imports made by the petitioner or its related party is too small and the petitioner should be considered as eligible domestic industry within the meaning of Rule 2(b).

11. The applicant submitted that Asian Paints primarily produces Penta for captive purposes and the company sells some material in the market also. Petitioner considered production of Asian Paints to the extent of merchant sales. Perstorp also produces the subject goods. However, it has started importing the subject goods in significant volume and as per petitioner's knowledge, Perstorp has completely switched over to imports and closed production in the POI. The interested parties have argued that production of Asian Paints cannot be excluded merely because they have consumed some volume captively.

12. Post hearing, Asian Paints filed a letter giving therein information on procurement of Pentaerythritol from various sources, including domestic industry and imports from various sources. The domestic industry argued that Asian Paint has imported the Pentaerythritol from subject territory and other countries and volume of such imports is quite significant. The information on record shows as follows with regard to Asian Paints.

SN	Description	POI	2009-10	2010-11
1	Production of Pentaerythritol	5,875	4,700	5,400
2	Imports of Pentaerythritol			
	➤ From subject territory	164	-	1,234
	➤ From other countries	-	-	-
3	Procurement from Kanoria Chemicals	4,928	4,059	3,145
4	Sales volumes of Pentaerythritol	2,570	2,056	2,509
5	Captive consumption of Pentaerythritol	3,030	2,424	2,891

13. The Authority observes that (a) Asian Paints has been producing Pentaerythritol both for captive consumption and merchant sales, (b) even when the company is producing Pentaerythritol and selling in the market, it is buying Pentaerythritol from market – both from domestic and imported sources, (c) volume of purchase by the company both from domestic and imported sources is quite significant, (d) the company has imported Pentaerythritol from amongst subject territory, (e) the petitioner argued that Asian Paints should be held ineligible domestic industry in view of these imports made by them from subject territory, (f) while the company has responded to the Authority, it has not provided injury and costing information and, therefore, in any case the information relating to the company cannot be included for injury determination. The Authority, however, considers it is unnecessary to determine whether or not Asian Paints is an eligible domestic industry in view of the fact that company has not provided injury information and production of petitioner constitutes a major proportion in Indian production.

14. Authority notes that even though Perstorp is participating in the present investigations, the company has not provided any information with regard to its capacity, production and sales of Pentaerythritol from its Indian plant. Nor the company has rebutted the claim of the petitioner that Perstorp has suspended its own production in India and has resorted to imports. Perstorp has also not denied the claim of the petitioner that its production during the POI was nil.

15. Authority notes that the Applicant fulfils the requisite criteria to satisfy standing and constitutes the domestic industry as required under Rule 5(3) and Rule 2(b) of the AD Rules as its share of the subject goods in the domestic market is more

than 50%, both with or without captive consumption of Asian Paints. The Authority considers that it is not necessary to decide whether production of Asian Paints should be included to the extent of captive consumption or full production, nor it is necessary to decide whether Asian Paints should be considered as eligible domestic industry in view of its imports, as the applicant satisfies standing after including full production of Asian Paints.

#### D. DUMPING MARGIN

##### D.1. Views of the Domestic Industry

16. Following issues with regard to dumping margin and export price were submitted by Domestic industry during the course of investigation:

- i. Normal Value: Efforts were made to get evidence of price of product concerned in the domestic market of European Union. Efforts were also made to get any evidence of price from published sources. However, no such information on price in the domestic market of European Union could not be obtained and, therefore, the normal value has been constructed for all exporters/producers from EU excluding Sweden based on international raw material prices, consumption norms of the industry, estimates of conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit margin.
- ii. Export Price: Export price has been determined on the basis of weighted average import price into India. These prices are assessable values of imports. According to the WTO Agreement on Anti-dumping and Indian Anti-dumping Rules, it is necessary to compare the normal value and export price at the same level of trade. The export price has been, therefore, adjusted for the following expenses, which the exporters and/or the producers in the exporting country should have incurred: Ocean freight, Marine Insurance, Inland transportation, Port handling and port charges and Bank Charges. Accordingly, necessary adjustments as above have been made while calculating the net ex-factory export price.
- iii. Dumping Margin: Considering the normal value and export price as calculated, it is observed that the exporters from the subject territory are resorting to large scale dumping of Pentaerythritol in the Indian market. Existence of significant dumping margin is obvious, given that the exporters from EU preferred to reduce the prices, instead of increasing the same, necessitated as a result of increase in input costs.

##### D.2 View of Exporters/Importers and Other Interested Parties

17. The exporters and consumers have made the following submissions with regard to normal value, export price and dumping margin:

- a) Normal value presented in the petition is illegal and based on irrelevant evidence:

- i. Petitioner has claimed that prices of the subject goods prevailing in subject territory are not available to them and as a consequence resorted to 'constructing' the normal value.
- ii. The petitioner has constructed the normal value for the raw material also.
- iii. Petitioner has used consumption norms given in the SION published by the DGFT, which are always higher.
- iv. Petitioner has added 5% towards interest and another 5% towards profit.
- v. Further, they have added 5% towards interest in the CNV for Formaldehyde and another 5% interest on the total cost of Penta also.
- vi. It is impermissible to consider cost and prices prevailing in India in the absence of availability of data for Europe.
- vii. Domestic Industry has constructed the normal value based on international raw material prices and consumption norms of the domestic industry. This methodology is not WTO compatible as there is domestic consumption of the subject goods in the exporting country in the ordinary course of the trade.
- viii. Petitioner has not made use of Market Research Reports that are easily available on website. Data provided by Eurostat can be considered as normal value in EU.

b) Export price presented in the petition is unsubstantiated:

- i. Evidence for ocean freight has only been provided. No evidence for other deductions has been provided.
- ii. The remaining four charges have been made at the rate of 0.5% of CIF price. While marine insurance may be linked to CIF value; bank charges, inland transportation, port handling charges cannot be as high as 0.5% of CIF value.
- iii. The exporter has requested consideration of resale price of Perstorp India as net export price.

c) For the above reasons, dumping margin is unsubstantiated.

d) The price difference in the market is due to strengthening of Euro.

### D.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

18. Under section 9A (1) (c), the normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or
- (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:
  - (a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(b) The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

19. The Authority notes the contentions of the interested parties with regard to determination of dumping margin. The Authority also notes that the petition is required to contain sufficient *prima facie* evidence of dumping to justify initiation of investigations, for which the petitioner is required to provide best available information. Now, when one exporter (Perstorp Chemicals GmbH) has provided relevant information, the Authority has adopted the same for determining dumping margin. With regard to the claim that the Petitioner has not made use of Market Research Reports that are easily available on website, the Authority holds that the petition contained sufficient *prima facie* evidence of dumping. In fact, the dumping margin determined on the basis of questionnaire response establishes existence of significant dumping by the exporters.
20. With regard to the claim that the price difference in the market is due to strengthening of Euro, the Authority notes that it is required to consider the normal value and export price in the same currency, which has been done in the present case. The same shows existence of significant dumping by the exporters.
21. With regard to the claim that resale price of Perstorp India as net export price be considered, the authority notes that the exporter has provided no information or evidence to show that the import price was unreliable in view of association of relationship. The authority further notes that mere existence of relationship is insufficient. It must be shown that the export price is unreliable because of relationship.

#### **D.3.1 Dumping margin for European Union (excluding Sweden)**

##### **D.3.1.1 Normal Value for Perstorp Chemicals GmbH, Germany**

22. M/s. Perstorp Chemicals GmbH, Germany has provided cost of production and selling price in the EU market to be considered as normal value. M/s Perstorp Chemicals GmbH, Germany has reported total domestic sales of \*\*\* MT of subject goods during POI for the total invoice value of EUR \*\*\*. Thus, the per unit value works out to EUR\*\*\*/MT equivalent to US\$ \*\*\* /MT. Adjustment has been claimed on account of insurance, commission, inland freight and cost of credit. Information filed by the company has been verified by the Authority and a verification report has been issued to the company. Comments offered by the company have also been considered for determination of normal value. The Authority admits the said domestic sales information as the basis of the normal value in terms of the relevant provisions under the Rules. The Authority has also verified and admitted the adjustments claimed by the exporter as adjustments so

far as normal value is concerned. Thus, the normal value at ex-factory level is determined as US\$ \*\*\*/MT.

#### **D.3.1.2 Normal value for non-cooperative exporters**

23. The questionnaire response filed by the other responding exporter, M/s. Ercros S.A., Spain Ercros, was examined by the Authority and it was found that the company has not provided vital information for determination of dumping margin. The said exporter has provided information pertaining only to export sales to India. In particular, the company provided no information with regard to determination of normal value. The company was informed about this vital deficiency and advised to provide the said information. The company, however, preferred not to provide the relevant information. The Authority notes that individual dumping margin can be determined for a responding exporter only if such responding exporter fully cooperates with the Authority and provides all relevant information for determination of dumping margin. In the absence of any information with regard to determination of normal value, the Authority does not determine individual dumping margin for the said exporter. In the absence of complete response, M/s. Ercros S.A., Spain is being treated as non-cooperative. The normal value at ex-factory level has been determined on the basis of best available information with regard to the price of the product in the domestic market in Europe.

24. The Authority notes that no other exporter/producer has responded to the Authority in present investigation. For the non-cooperative exporters/producers, the Authority has determined the normal value at the same level as that of the cooperative exporter, i.e., at US\$ \*\*\*/MT.

#### **D.3.2.1 Export Price for Perstorp Chemicals GmbH, Germany**

25. M/s Perstorp Chemicals GmbH, Germany has reported total exports sales of \*\*\* MT of the goods during the POI for the total invoice value of \$ \*\*\*. Thus, the per unit value works out to US\$ \*\*\*/MT. Information filed by the company has been verified by the Authority and a verification report has been issued to the company. Comments offered by the company have also been considered by the company for determination of export price. Weighted average export price (CIF) to India is proposed to be determined at US\$ \*\*\*/MT as per data provided by the exporter in Appendix 3A of the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been claimed on insurance, commission, freight and cost of credit. The Authority determines the export price after making adjustments on account of insurance, commission, freight and cost of credit. Accordingly, the export price at ex-factory level is provisionally determined at US\$ \*\*\*/MT.

#### **D.3.2.3 Export Price for Non-cooperative exporters**

26. M/s Ercros S.A., Spain has reported total exports sales of \*\*\*MT of subject goods during the POI for the total invoice value of US\$\*\*\*. However, due to non-submission of complete response to determine dumping margin, the Authority has treated this exporter as non-cooperative. The Authority also notes that no other exporter from EU (excluding Sweden) has submitted exporter's questionnaire response. Therefore, the Authority has adopted the lowest

representative net export price to India of the cooperative exporter, i.e., US\$ \*\*\*/MT, for non-cooperative exporters, including M/s Ercros S.A., Spain.

27. On the basis of the above, the dumping margin has been worked out under:

#### Dumping Margin Calculation:

Exporter/Producer	Normal Value	Net export Price	Dumping Margin	
	US \$/MT	US \$/MT	US \$/MT	Range %
Perstorp Chemicals GmbH, Germany	***	***	***	30-40
Non-Co-operative producers/exporters including M/s Ercros S.A., Spain	***	***	***	45-55

#### **E. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK**

##### **E.1 Views of the Domestic Industry**

28. The domestic industry has submitted as under:-

- i. The imports from the subject territory have increased in absolute terms.
- ii. Exports from the subject territory are at significantly dumped price.
- iii. Production, sales and capacity utilization of the domestic industry has shown some improvement after the imposition of anti dumping duty on dumped imports from other sources.
- iv. Profit/loss had shown improvement up to 2007-08 and then started deteriorating in 2008-09 to the extent that losses were suffered in the POI.
- v. Profit before interest & taxes, cash profits, return on investments have all shown a similar trend.
- vi. Imports from the subject territory have been undercutting the prices of the domestic industry in the market to a significant degree.
- vii. Imports from the subject territory have forced the domestic industry to reduce the prices steeply during investigation period. Thus, the imports were depressing the prices in this period.
- viii. Employment levels with the domestic industry have not undergone any significant change. Wages paid have increased.
- ix. Inventory level with the domestic industry declined and then increased in the POI.
- x. Domestic industry posted negative growth in terms of price parameters, viz., cash flow, profits, return on investments etc. and market share. Overall, the domestic industry faced negative growth.
- xi. Considering the current influx of dumped imports from the subject territory, potential increase is highly envisaged, given the prices being offered by the foreign producers and the level of price difference between the imports and domestic product.

29. Various parameters relating to domestic industry collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury.

### E.2 Views of the Exporters, Importers and Other Interested Parties

30. The other interested parties have raised following issues with regard to injury and causal link:

- a) Domestic industry as a whole should be considered for injury analysis – The Authority shall not allow selective cooperation by the domestic producers. The authority shall direct all companies related to the petitioners to furnish full details or treat the petitioners as non-cooperative and terminate the investigation on this ground alone.
- b) All mandatory economic parameters have not been considered while making the injury claims.
- c) Existence of injury has not been established by the petitioner.
  - i. Market share – Considering the capacity of the domestic industry, it has a potential to achieve a market share of 32%. As against this, the petitioner has achieved 36%.
  - ii. There is no sign of injury in capacity, production, sales volume, employment, wages and ability to raise capital investments. The domestic industry is showing remarkable growth in almost all of the injury parameters. The petitioner has conceded that there has been an increase in the capacity, production and capacity utilization of the domestic industry and the domestic industry is showing remarkable growth in domestic sales. Further, there has been a significant growth in the employment and wages of the domestic industry and inventory has actually declined. Also, the domestic industry has commissioned a new plant at Vishakhapatnam and the project is financed by International Finance Corporation which shows that there is no negative impact on domestic industry's ability to raise capital.
  - iii. Domestic industry has claimed that there has been a decline in profits. However, this claim is not in consonance of the overall growth posted by the domestic industry.
  - iv. Domestic Industry has not provided any demarcation of loss suffered from export sales and the loss suffered due to domestic sales operations and hence it can be inferred that the claim of loss by domestic industry is solely due to loss on export sales. Therefore, injury to the domestic industry should be attributed to the loss accrued from the export sales.
  - v. The Authority should ensure that any effect of shutting down of the power plant of the domestic industry from 25<sup>th</sup> August 2009 to 19<sup>th</sup> October, 2009 on the production and sales of the subject goods should not be attributed to the injury claimed by the DI.
- d) There is no causal link between the alleged injury and imports of the respondents.

- i. Adequate protection has already been provided by the Authority against injury suffered due to imports.
- ii. Other factors include a steep increase in price of Methanol.
- iii. Asian Paints has an excess capacity of 2500MT above captive usage. Penta not being the main business, excess production would be injected into the domestic market at bare minimum prices. This means that a part of the alleged injury is due to underselling of subject goods by other domestic producer.
- iv. Landed price of imports from many countries other than EU are much below the import price from EU.
- v. German prices are higher than Chinese and Taiwanese prices and volumes from these countries are higher.
- vi. The price difference in the market is due to strengthening of Euro.
- e) Imports made by Perstorp group are not causing injury to the petitioner – In case of goods initially sold to Perstorp India and re-sold to customers, re-sale price of Perstorp India have to be considered and not the landed value of the imports into India.
- f) Imposition of anti dumping duty is clearly against public interest – Domestic industry is operating at 100% utilization. It would not be in a position to satisfy the need of user industries at internationally competitive prices.
- g) Domestic Industry cannot cater to the demand of the user industry for the subject goods.
- h) DA should not attribute injury caused due to imports from other countries to the present investigation.
- i) Price underselling claims are exaggerated by assuming 22% return on capital employed. The Authority should determine the rate of return based on the past performance of the domestic industry.
- j) Costing information of the petitioner does not include income from by-products. Sodium Formate is the by-product. After inclusion of profits on Sodium Formate, the petitioner's financial position will not show any injury.
- k) Costing of subject goods should be based on Cost Audit Report and cross verified.
- l) Separate margins should be determined for Technical and Nitration grades of Penta due to difference in applications, cost and price.

### **E.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY**

31. The Authority has taken note of submissions made by the interested parties. Annexure II of AD Rules provides for objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact on domestic producers of such products. While examining the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine as to whether there has been a

significant increase in dumped imports either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to price effect of dumped imports, the Authority is required to examine as to whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increase which would have otherwise occurred to a significant degree.

32. As regards the impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of AD Rules states as under: "*The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.*"

33. Production of petitioner constitutes a major proportion in Indian production. Petitioner constitutes domestic industry. No information in the form and manner prescribed has been filed by Asian Paints. Perstorp India also has not filed any information with regard to injury to domestic industry. Thus, the Authority has considered petitioner as the domestic industry for the purpose of the proposed determination in accordance with Rule 2(b). The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments of the interested parties. Further, various issues raised by the interested parties with regard to injury to the domestic industry have also been considered while examining injury to the domestic industry.

### **E.3.1 Volume Effect of Dumped Imports**

34. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. Annexure II (ii) of the anti dumping rules provides as under:

*"While examining the volume of dumped imports, the said authority shall consider whether there has been significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative in production or consumption in India"*

### **E.3.2 Assessment of demand and market share**

35. Designated Authority has determined demand as the sum of domestic sales of the domestic industry, sales of other Indian producers and imports of the subject goods in India from all sources after considering both including and excluding captive consumption by Asian Paints. The demand so assessed is shown in the following table. It is seen that demand of the product in the Country has

increased in the POI after a decline in 2008-09 (which is attributed to the recessionary effect).

	2006-07	2007-08	2008-09	POI Annualized*
Demand – MT(excluding captive consumption)				
Sales of Domestic industry	5750	6117	5401	6778
Sales of other Indian producers	7479	8342	5092	2056
Imports from EU (excluding Sweden) - Subject territory	256	2900	3575	6935
Imports from China & Sweden – SSR	1296	1588	2496	903
Imports from Taiwan-MTR	260	1252	247	2200
Imports from Other Countries	1428	1136	378	1771
Total Demand	16469	21335	17189	20643
Trend	100	130	104	125
Demand – MT(including captive consumption)				
Sales of Domestic industry	5750	6117	5401	6778
Sales of other Indian producers	10230	11219	7467	4480
Imports from EU(excluding Sweden) - Subject territory	256	2900	3575	6935
Imports from China & Sweden – SSR	1296	1588	2496	903
Imports from Taiwan-MTR	260	1252	247	2200
Imports from Other Countries	1428	1136	378	1771
Total Demand	19220	24212	19564	23067
Trend	100	126	102	120

\* POI= April'09-June'10

	2006-07	2007-08	2008-09	POI Annualized*
Market Share in demand excluding captive (%)				
Domestic industry	34.92	28.67	31.42	32.84
Other Indian Producers	45.41	39.1	29.62	9.96
Imports from EU(excluding Sweden) - Subject territory	1.55	13.59	20.8	33.6
Imports from China & Sweden – SSR	7.87	7.44	14.52	4.37
Imports from Taiwan-MTR	1.58	5.87	1.44	10.66
Imports from Other Countries	8.67	5.32	2.2	8.58
Market Share in demand including captive (%)				
Domestic industry	29.92	25.26	27.61	29.39
Other Indian Producers	53.22	46.34	38.17	19.42
Imports from EU(excluding Sweden) - Subject territory	1.33	11.98	18.27	30.07
Imports from China & Sweden – SSR	6.74	6.56	12.76	3.91
Imports from Taiwan-MTR	1.35	5.17	1.26	9.54
Imports from Other Countries	7.43	4.69	1.93	7.68

\* POI= April'09-June'10

### **E.3.3 Import Volume and Market Share**

36. The Authority notes that the imports from EU (excluding Sweden) have increased significantly over the injury investigation period. Sales of the domestic industry declined significantly in 2008-09, which is attributed to the recessionary effect and thereafter increased in the POI. Market share of the subject imports have increased significantly over the injury period. Imports from the subject territory have increased significantly in terms of production and consumption in India.

### **E.3.4 Price Effect**

37. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:

*"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."*

38. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. A comparison for product concerned was made between the landed value of exported product and the average selling price of the domestic industry for domestic market net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject territory were sold in the Indian market at prices which were lower than the domestic industry's prices. It is, thus, seen that imports were undercutting the domestic prices and margin of undercutting is considered significant.

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI
Landed Value	Rs./MT	56,334	84,124	89,252	63,489
Indexed		100	149	158	113
Net Sales Realization	Rs./MT	***	***	***	***
Indexed		100	115	120	99
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Indexed		100	(25)	(36)	46
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	Range	15-25%	Negative	Negative	5-15%
Non Injurious Price (NIP)					***
Price Underselling					***

39. The Authority notes that the landed price of imports is significantly below the selling price of the domestic industry. Thus, imports of subject goods from the subject territory are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. It is further noted that the landed price of imports is significantly below the non injurious price of the domestic industry determined by the Authority. The imports are thus have underselling effects on the domestic industry. The Authority also notes that it has consistently considered 22% return on capital employed for determination of non injurious price. Moreover, even if much lower rate of return (say 10%) is allowed, the price underselling continues to be significant and material.

40. Considering the fact that the Authority is also required to look into the dumping and consequential injury to the Domestic Industry and also considering the fact that two of the exporters have provided data, Authority concludes that it is necessary to evaluate the price undercutting and injury margins for the responding exporters. The table below shows the factual position. It is seen that the exports by the responding exporters were undercutting the domestic industry prices and injury margin in respect of these exports is quite significant.

	Unit	Perstorp	All others
Non injurious price	US \$/MT	***	***
Net sales realisation	US \$/MT	***	***
Landed Cost	US \$/MT	***	***
Price undercutting amount	US \$/MT	***	***
Price undercutting %	Range %	10-15	15-20
Injury Margin	US \$/MT	***	***
Injury Margin % of NIP	Range %	30-40	40-50

### Price suppression and depression

41. In order to determine whether the effect of such imports is to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority has compared trends in cost of production and selling price of the domestic industry over the injury period.

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI
Cost of sales	Rs/MT	***	***	***	***
Change from base year	Indexed	100	94	108	104
Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
Change from base year	Indexed	100	115	119	99

42. The cost and price structure of the domestic industry and the landed value of imports from the subject territory show that the cost has declined by 4% between 2008-09 and POI (i.e., by Rs. \*\*\* pmt); whereas net sales realization has declined by 20% (i.e., Rs. \*\*\* pmt) during the same period. Further, the price at which material is being sold by the Indian Producers does not provide reasonable return on investment and is below non-injurious price of the domestic industry. The

Authority concludes that imports were significantly depressing the prices of the product in the market.

### **E.3.3 Economic Parameters Relating To the Domestic Industry**

43. Annexure II to the Rules requires that the determination of injury shall involve an object examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of the subject goods. Further Annexure II (iv) of the Rules lays down as follows:

*"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."*

#### **Actual and potential Production, Capacity and Capacity Utilization, Sales**

44. Information on capacity, production, capacity utilization and sales volumes of the domestic industry has been as under:-

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI Annualized
Installed capacity	MT	6,000	6,000	6,000	6,000
Trend	Indexed	100	100	100	100
Production	MT	6,267	6,284	6,175	6,437
Trend	Indexed	100	100	99	103
Capacity utilization	%	104	105	103	107
Trend	Indexed	100	100	99	103
Domestic sales	MT	5,750	6,117	5,401	6,778
Trend	Indexed	100	106	94	118
Demand including captive consumption	MT	19,220	24,212	19,564	23,067
Trend	Indexed	100	126	102	120

45. The Authority notes that the production, domestic sales and capacity utilization of the domestic industry shows improvement. However, increase in demand is higher than increase in production and sales of the domestic industry. Further, despite improvements in production, domestic sales and capacity utilisation, the price parameters relating to the domestic industry have significantly deteriorated.

**Profits, return on investment and cash flow**

46. Profits, return on investment and cash flow of the domestic industry have been examined as under:

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI annualized
Profit before tax	Rs/Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	4,831	2,445	(1005)
Profit before interest and tax	Rs/Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	1,031	553	(205)
Return on capital employed (NFA basis)	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	951	484	(131)
Cash profit	Rs/Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	1,047	572	(121)
Profit before interest & depreciation	Rs/Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	626	357	(67)

47. The Authority has verified information with regard to profits, return on investment and cash profits claimed by the domestic industry. The above data shows that the profitability improved in 2007-08 as a result of anti dumping duty imposed on imports from other dumped sources. However, the position deteriorated in 2008-09 and worsened in the period of investigation to the extent that significantly losses were suffered. Similar trend is observed with respect to cash profit and return on investment.

48. It was argued that the injury to the domestic industry is partly due to recessionary effect. It is noted in this regard that whereas the domestic industry earned profits in 2008-09, it suffered financial losses during the POI.

49. It was argued that the financial losses to the domestic industry could be due to higher costs on account of depreciation of the new plant. It is however noted that the depreciation of the new plant has no relevance to the present product, as the two products are different products and the company has maintained separate records of the two products. Further, it is found that depreciation amount charged over the years has not substantially increased in the POI. Above all, it is noted that profit before interest & depreciation has also shown significant deterioration, which clearly establishes that the decline in these parameters is not to higher incidence of interest or depreciation.

50. With regard to the claim that the costing information of the petitioner does not include income from by-products, the Authority has verified information relating to the domestic industry and has found that the same duly accounts for by products income. There is no evidence provided by the interested parties to establish that income from by product products has not been adjusted by the domestic industry.

51. With regard to the claim that costing of subject goods should be based on Cost Audit Report and cross verified, the Authority notes that it has verified the information filed by the domestic industry and the same has been adopted for the proposed determination.

52. The Authority concludes that the profitability of the domestic industry improved initially and thereafter once again deteriorated in POI. It is noted that the product was being dumped from other sources. The Authority conducted midterm review investigations in respect of imports of Pentaerythritol from Taiwan and sunset review investigations in respect of imports from China and Sweden. The Authority concluded in the final findings of those investigations that the performance of the domestic industry deteriorated due to dumping of the product in India. The investigation period of these investigations were Jan.-Dec., 2009. The decline in profits and consequently return on investment and cash profits in the present POI is attributable to fresh dumping from EU.

### Employment and wages

53. The Authority notes that the constituent of the domestic industry is a multi product, multi location company and, therefore, there may not be direct effect of dumping on employment levels of the domestic industry. Status of employment levels and wages of the domestic industry has been as under:

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI Annualized
Employment (Manpower strength)	Nos	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	108	112	114
Wages	Rs/Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	116	128	149
Profit and Loss	Rs/MT	***	***	***	***
Increase / decrease in comparison to previous year	Rs/MT	***	***	***	***
Salary and wages	Rs/MT	***	***	***	***
Increase / decrease in comparison to previous year	Rs/MT	***	***	***	***

54. The interested parties argued that wages paid by the domestic industry have shown abnormal increase. The Authority therefore examined in detail the claims with regard to wages and whether the increase in wages could have led to the claimed decline in profits of the domestic industry. It is noted that the domestic industry has reported wages charged in respect of production of Pentaerythritol for domestic market. Since the company was earlier having significant exports, which have now declined, the wages charged to the product for domestic has increased to that extent. It is also noted that whereas the cost of production on account of wages increased by about Rs. \*\*\* per MT, the profitability of the domestic industry declined by about Rs. \*\*\* per MT. It is thus evident that the decline in profitability is far disproportionate to the increase in costs on account of wages. The Authority concludes the claimed deterioration in profitability is primarily because of the steep decline in prices and not any possible abnormal increase in wages.

### Productivity

55. The productivity of the domestic industry is given in the following table:

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI Annualized
Productivity per employee	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	92	88	90
Productivity per day	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	99	103

56. The Authority notes from the above table that productivity of the domestic industry declined between 2007-08 and 2008-09, but improved slightly in the POI. However, the productivity levels per employee in the POI, even though better than 2008-09 were lower than productivity levels in 2006-07.

### Inventories

57. Designated Authority has examined the inventory level of the domestic industry, which is given in the following table:-

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI Annualized
Average stock	MT	627	150	246	267
Trend	Indexed	100	24	39	43

58. Based on the above, Authority notes that the inventory levels of the domestic industry declined in 2007-08 and then increased in 2008-09 and the POI. In fact, inventory levels with the domestic industry continued to be significant and average level of inventories increased. It has been submitted by the domestic industry that they cannot afford to hold high stock of inventories and have to dispose of the same at whatever prices it can sell the product in the market.

### Factors affecting domestic prices

59. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In order to assess the effect of imports on the domestic market, Designated Authority analyzed import prices over the injury period and found that the landed value of imports per MT from the subject territory, in the period of investigation, is lower than the net selling price and non-injurious price. Change in cost structure if any, due to competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing

the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. The Authority provisionally concludes that there is no viable substitute to this product and the prices were affected due to dumped prices.

60. Designated Authority determined the net sales realization of the domestic industry considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The comparison is done between the net sales realization and the landed price of imports. The Authority concludes that landed value of imports from the subject territory was lower than the net sales realization of the domestic industry for the subject goods during the POI and, thereby, undercutting the selling price of the domestic industry.

61. The price underselling is an important indicator of assessment of injury, and thus, the Authority has worked out a non-injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been worked out for the domestic producer by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The Authority found that the landed value of imports per MT, in the period of investigation, is lower than the non injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation in respect of the subject territory.

### Growth

62. On examination of various economic parameters of the domestic industry, Authority notes that though the volume parameters such as production and sales show improvement; various price parameters of the domestic industry show negative trend, which is in spite of anti dumping duty in force against other dumping sources, and provisionally concludes that resultantly, growth of the domestic industry remained negative.

### Ability to raise capital

63. The domestic industry is a multi product company. Their ability to raise further investment is not a significant factor in this case. However, should the dumping from the present source persist, ability of the domestic industry to raise capital would suffer severely.

### Conclusion on material injury

64. Some interested parties have argued that domestic industry has not suffered material injury as is evident from improvements in production, capacity utilization, domestic sales. It has also been argued that even at full capacity, the domestic industry could not have improved its market share and adequate protection has already been given to the domestic industry. It has also been argued that injury to the domestic industry is due to steep increase in the prices of methanol. It is also argued that the landed price of imports from other countries is lower than landed price from current subject territory. These interested parties have also argued that imposition of anti dumping duty is not in public interest.

65. The Authority notes that the rules do not provide that the domestic industry should have suffered material injury in respect of each injury parameter. Under

the Rules, a determination of injury involves an objective examination of (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. Information on record shows that there has been a significant increase in the dumped imports, both in absolute terms and relative to production or consumption in India. There has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India and the effect of such dumped imports is to depress prices to a significant degree. Consequent impact of dumped imports on the domestic industry might be evident from one or more economic parameters. The Authority has examined consequent impact of dumped imports by considering an analysis of various economic parameters listed under the law.

66. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current injury, the Authority concludes that:

- i) The demand of the subject goods has increased from 100 (Index) in base year to 120 (Index) in POI, i.e., it increased by 20%. During the same period, the imports from the subject territory have increased 27 times. It is seen that the imports of the subject goods from the subject territory have increased significantly in absolute terms and in relation to production & consumption in India.
- ii) The subject goods are entering the Indian market at dumped prices and dumping margin of the subject goods imported from the subject territory are substantial and above de-minimis.
- iii) The imports from the subject territory are significantly undercutting the prices of the domestic industry. Further, while cost of production and selling price both have shown a decline, the decline in the selling price is significantly higher than the decline in the cost of production. The imports are thus depressing the domestic prices.
- iv) As a result of the significant increase in imports and significant price difference between the imported and domestic product, the performance of the domestic industry has deteriorated in terms of profits, return on investments and cash profit. The deterioration in the performance during the current period is quite significant and material.
- v) Even though the domestic industry has been able to gain sales volumes, the same have been at the cost of sub-optimal prices in view of presence of dumped imports in the market from the present source.
- vi) Even though production, productivity and capacity utilization has not deteriorated, the decline in profits, return on investment and cash profits is too significant to establish adverse consequent impact of dumped imports on the domestic industry.
- vii) Parameters such as employment, wages, inventories do not show significant adverse impact of dumped imports.
- viii) Dumping margin is quite significant and the price difference is clearly suggestive of adverse consequent impact of dumped imports on the domestic industry.

67. The above analysis shows that the domestic industry has suffered material injury.

#### F Causal Link

68. As per the AD Rules, the Authority is, inter alia, required to also examine any known factors other than the dumped imports, which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors are not attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry.

69. It was examined whether these other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It was found that:

a. Imports from Third Countries: - The Authority notes that during the POI, imports beyond de-minimus limits have taken place from EU (excluding Sweden), and other countries (China, Sweden and Taiwan) against which investigation have been earlier concluded and Saudi Arabia (against which the domestic industry has filed petition claiming that the same are also dumped imports and the petition is under consideration of the Authority). It has not been shown that the volume of imports not sold at dumped prices have had significant adverse impact on the domestic industry.

b. Contraction in Demand: - The Authority notes that demand of the product under consideration had declined in 2008-09 and then increased in the POI. Decline in demand cannot be considered as the factor that would have impacted the domestic industry. It is noted that the overall demand for subject goods has shown positive growth during the injury period as is evident from the table below.

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI Annualized
Total demand excluding captive	MT	16,469	21,335	17,189	20,643
Trend	Indexed	100	130	104	125
Total demand including captive	MT	19,220	24,212	19,564	23,067
Trend	Indexed	100	126	102	120

c. Pattern of consumption: - No significant change in the pattern of consumption has come to the knowledge of the Authority, nor any interested party has made any submission in this regard.

d. Conditions of competition: - The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. The domestic industry competes among one another and at the same time competes with the landed price

of the subject goods. Moreover, imports from other sources have sizable presence in the Indian market.

e. Developments in technology: - The investigation so far has not shown that there was any significant change in technology, which could have caused injury to the domestic industry.

f. Export performance of the domestic industry:- The exports of the domestic industry are only 20 MT during the POI and it constitutes less than 1% of their production. Further, exports by the domestic industry have declined significantly over the period. The injury information has been segregated for domestic operations and only performance of the domestic industry with regard to domestic operations alone has been considered with regard to profits, return on investments and cash profits. Therefore, exports could not have affected its overall adverse performance in the current POI with regard to significant deterioration in profits, return on investments and cash profits.

g. With regard to the claim that imports made by Perstorp group are not causing injury to the petitioner, the Authority notes that Perstorp has neither claimed nor established that the export price is unreliable because of association of relationship. Therefore, in a situation where the exporter has not established that the export price is unreliable because of relationship, the CIF export price is required to be considered for determination of dumping margin and injury margin. The same has been done by the Authority.

70. In order to determine whether the effect of such imports is to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority has compared trends in cost of production and selling price of the domestic industry over the injury period.

71. No other factor which could have possibly caused injury to the domestic industry has been brought to the knowledge of the Authority. The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, the following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.

i) The subject goods are entering the Indian market at dumped prices and dumping margin of the subject goods imported from subject sources are substantial and above de-minimis.

ii) Subject imports are available at prices lower than domestic industry. Consequently, the consumers are increasingly switching over to imports, thus forcing the domestic industry to offer sub-optimal prices. The price depression felt by the domestic industry is clearly due to dumped imports.

iii) Even though the domestic industry has been able to gain sales volumes, the same have been at the cost of sub-optimal prices in view of presence of dumped imports in the market.

iv) The imports are occurring at low and dumped prices and are undercutting the prices of the domestic industry. Consequently, the domestic industry has been

forced to reduce the prices, which has adversely impacted performance of the domestic industry on account of profits, return on investment and cash flow.

v) The imports are undercutting the domestic prices. Resultantly, the domestic industry is faced with price depression in the market, much beyond the decline in the costs.

72. The Authority is of the view that material injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports.

#### **G Magnitude of injury and injury margin**

73. With regard to the claim that separate margins should be determined for Technical and Nitration grades of Penta due to difference in applications, cost and price, the Authority notes that technical and nitration grades are merely two different grades of Pentaerythritol. The dumping margin and injury margin are required to be determined for the product under consideration. Mere difference between the cost and price of the two product types does not imply that the Authority should determine separate dumping margin and injury margin.

74. The Authority has determined non-injurious prices of the subject goods for the domestic industry taking into account the cost of production of the domestic industry. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports to determine injury margin. The injury margins have been worked out as follows:

	Unit	Perstorp	All others
NIP	US \$/MT	***	***
Landed cost	US \$/MT	***	***
Injury Margin	US \$/MT	***	***
Injury Margin as % NIP	Range %	30-40	40-50

#### **Post Disclosure Statement submissions**

##### **75. Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry**

- i. The product is sold in two grades – technical and nitration. However, irrespective of the differences in cost and price product under consideration is the same. However, the scope of the product remains the same irrespective of the grades.
- ii. The petitioner constitutes domestic industry and had standing to file the present petition, notwithstanding the small insignificant volume of imports made by the petitioner or its related party.
- iii. Asian Paints cannot be considered as domestic industry in view of significant imports made by the company from subject countries. In any case, the captive consumption of Asian Paints cannot be considered.
- iv. The Authority has rightly rejected the response of Ercros on the ground that the exporter has not fully co-operated with the Designated Authority.

- v. Perstorp had disputed the quantum of normal value determined by the domestic industry. The dumping margin determined by the Authority establishes that the dumping margin is indeed quite significant.
- vi. Domestic industry reiterated its submissions with respect to the injury as follows:
  - a. The imports from the subject country increased significantly in absolute terms and in relation to production & consumption in India.
  - b. Imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry.
  - c. Significant undercutting has led to price suppression in the market.
  - d. As a result of significant increase in imports and price difference between the imported and domestic product, performance of the domestic industry significantly deteriorated over the period of investigation in terms market share, profits, return on investment, cash flow and inventories.
  - e. The deterioration in the performance during the current period is quite significant and material.
  - f. In addition to material injury, facts of the case clearly establish that the domestic industry is threatened with material injury by the dumped imports.
- vii. Recommendation of anti dumping duty should be in fixed quantum in terms of US Dollars.

#### 76. Post Disclosure Statement submissions by other Interested Parties

- i) Only five days were given for the submission, wherein this period also coincides with Easter, and therefore, the actual time given to European parties is even shorter and, therefore, the deadlines for comments cannot be treated as fair by any reasonable standard.
- ii) Investigating authority is not at liberty to reject reliable data in the course of the injury analysis as has been done by rejecting DGCI&S data and accepting the IBIS data as provided by the petitioner merely on the ground that it reflects higher volumes, whereby it better served the purpose of showing the existence of injury to the domestic industry.
- iii) Any losses suffered during the economic crisis are not indicative of trade related losses and, therefore, the investigating authority's reference to negative trends in the domestic industry's performance during the period of economic crisis is irrelevant.
- iv) Market share of domestic industry declined only in the period of 2007-08, i.e., the period of economic crisis. Market share of EU imports increased in line with the decrease in market share of other Indian producers. Perstorp India replaced its Indian production by non – Indian production which has triggered the overall increase in market share of EU and, therefore, initiation of this case itself is unjustified let alone imposition of duties.
- v) Injury analysis is not objective as the Authority was not consistent in its choice of the time periods underlying the injury and the dumping

assessment. Most data from the POI was used for the calculation of dumping margin and injury margin but then assessment was made for certain cost elements on the basis of data from the "over the past three years and POI". This might have inevitably distorted the calculation.

vi) There is no adverse price effect on the domestic industry. Kanoria Chemicals supplied 63% of their total sales to Asian Paints Ltd. in 2009-10 and nearly 89% of the total products sold to the Asian Paints for the period April 2010-June 2010. Thus, it can be concluded that prices at which Asian Paints has procured Penta from Kanoria Chemicals is the selling price of the DI. The average selling price of Kanoria Chemicals to Asian Paints has declined by mere 0.3% in POI as compared to 2009-10. This is in sharp contrast to the conclusion arrived by the Hon'ble DA that increase in sales volume is on account of sub optimal prices of the DI.

vii) The importers had also assured the Hon'ble DA that in case of any verification, the vouchers for the above transaction would be provided by Asian Paints Ltd. However, the importers did not receive any communication from the Hon'ble DA with regards to the verification nor the Hon'ble DA has addressed this claim of the importers in the Disclosure report.

viii) Price undercutting analysis is not based on the facts. Since Kanoria chemicals sold nearly 70% of its products to Asian Paints Ltd in the POI, the selling price to Asian Paints by Kanoria Chemicals can be taken as the domestic selling price of DI. As per the data provided by Asian Paints Ltd, the difference between the DI's selling price and the import price is less than 8% and the same is less than 10-15% as concluded by the Hon'ble DA.

ix) The Hon'ble DA has concluded that domestic selling price has declined by 20% in POI as compared to 2008-09. POI in the present investigation is for a period of 15 months. Thus as per the DI, the indexed domestic selling price is same in 2009-10 and also in POI. However the price at which Kanoria Chemicals supplied to Asian Paints Ltd during the POI shows an increasing trend on a quarter basis considering 70% of Kanoria's sales are to Asian Paints.

x) Domestic Industry is not suffering from material injury in terms of production, domestic sales, capacity utilization and market share.

xi) The importers in their submission had submitted that the decline in profits is on account of expenditure on a new plant by the DI whereas the DA has concluded that; "*It was argued that the financial losses to the domestic industry could be due to higher costs on account of depreciation of the new plant. It is however noted that the depreciation of the new plant has no relevance to the present product, as the two products are different products and the company has maintained separate records of the two products.*" However as per the news reports, the DI had planned to produce the PUC from the newly established plant. We would thus

request the Hon'ble DA to make a finding as to whether the new plant at Vizag is producing the PUC or any other product.

xii) There has been a decrease in inventory of Pentaerythritol of the DI, contrary to the findings of the DA that inventory level has raised. As per the Annual report for FY 2010-11 of the DI, the opening stock for Pentaerythritol on April 1, 2009 was 497 MT which decreased to 228 MT on March 31, 2010 and which further decreased to 61 MT on March 31, 2011. Thus it is clear that DI has very low levels of inventory.

xiii) An assumption that the DI should have a fixed return on capital every year is erroneous and contrary to all norms of an open market as it seeks to create an artificial risk free environment for domestic industry. Hon'ble DA should consider the historical return of the company.

xiv) The non segregation of injury leads to break in of the causal link as it cannot be established that during the POI, the material injury as claimed by the DI was on account of the PUC from the subject country only and not from any other sources.

## 77. Examination by the Authority

Arguments of the Domestic Industry and other Interested Parties have been examined by the Authority hereunder to the extent these are found relevant to the present investigation:

- i) As regards the argument that there is no adverse price effect on the domestic industry, the Authority notes that the information on record clearly shows existence of significant price undercutting. It is also clearly established that the domestic industry has suffered price depression. All arguments on this account are factually incorrect. Further, as regards comparison of 2009-10 with POI, it may be noted that the POI includes entirety of 2009-10 and three months thereafter. The comparison is, therefore, misleading. In any case, the Authority has considered 2006-07, 2007-08, 2008-09 and POI for injury analysis. It would be inappropriate to selectively do comparison.
- ii) As regards the argument that no communication received for verification, the Authority notes that the investigations started on 11<sup>th</sup> January, 2010. During a period of more than one year, Asian Paints never provided information, nor offered verification of its information. It is only at the stage of post hearing written submissions, they have filed submissions. Even now also, the company has neither expressly supported the petition nor opposed the petition. However, the company appears to be tacitly opposing imposition of anti dumping duty.
- iii) As regards increase in the prices after the POI, it has been consistent practice of the Authority to undertake dumping and injury analysis on the basis of information for the investigation period. It is, however, relevant to point out that the domestic industry has filed a petition in respect of Saudi Arabia, wherein the company has claimed injury in that investigation period. Investigation period of that case is post POI of the present case.

Therefore, it does not prima facie appear that the domestic industry is no longer suffering injury.

- iv) With respect to the claim of IPA that petitioner has planned to produce PUC at its newly commissioned plant at Vizag, the record does not show production of Pentaerythritol at the new location. The company has reported the same level of capacity throughout the injury period, which could not have been true, had the company set up additional capacities at the new location. In any case, the Authority notes that information for Pentaerythritol alone has been considered, which has also been verified by the investigating team.
- v) With respect to claims of IPA regarding fall in inventory level of the petitioner, the period considered is 2010-11. However, the POI was April 2009 to June 2010.
- vi) As regards injury from other dumped sources, the rules require the Authority to segregate injury suffered by the domestic industry from undumped imports. Injury suffered by the domestic industry from other dumped imports is not required to be segregated under the law.
- vii) As regards rate of return, firstly, the Authority consistently considers 22% return on capital employed. Secondly, the past period of the product is a period when the domestic industry was suffering injury from other dumped imports. Therefore, the past injury period in any case cannot be a benchmark for determining reasonable rate of return on capital employed.
- viii) As regards no injury in respect of volume parameters, the legal position is very clear. The consequent adverse impact of dumped imports may be established in terms of any one or more parameters listed under the law. It is not necessary that the domestic industry should have suffered injury in respect of all injury parameters.
- ix) With regard to time limits, it is noted that significant time in this case was lost in view of decision of Hon'ble High Courts in India holding that the Designated Authority does not have discretion under the law in a situation where a domestic producer has imported the product or is related to an importer/exporter. Even when the decision of the Hon'ble High Courts were in respect of other products and did not directly pertain to the current case, yet, the decision was directly applicable to the present case and it would not have been appropriate for the Designated Authority to ignore the said decision and issue the findings. It is noted that the Hon'ble High Court of Kolkata issued the relevant order on 19<sup>th</sup> Aug., 2011, which was stayed by the Hon'ble Division Bench on 23<sup>rd</sup> Dec., 2011. Further, Hon'ble High Court of Madras had issued the relevant order on 21<sup>st</sup> Nov., 2011, which was stayed by the Hon'ble Division Bench on 2<sup>nd</sup> Feb., 2012. It would, thus, be seen that the time available to the Authority was significantly curtailed due to the court orders. Further, on factual aspects of the case, the comments of the interested parties are merely repetitive.
- x) As regards the argument on rejection of DGCI&S import data, the Authority notes that DGCI&S has provided information in respect of specified HS Code whereas IBIS has provided information in respect of specified description, it follows that DGCI&S data may not comprehensively include volume of imports reported during relevant period. In a situation where the volume of imports reflected in DGCI&S data is lower than IBIS data and where it is found from the IBIS data that

the imports of product under consideration have been reported in classification other than the classification meant for the product under consideration, it has been consistent position of the authority to consider the correct volume of imports during the period.

- xii) As regards the argument on economic crisis, it is noted that the alleged phenomena of economic crisis was a global phenomena and should have equally impacted both the domestic and export price. It is, however, noted that the producers in subject territory exported the product at significantly dumped prices.
- xiii) As regards substitution of production by Perstorp from India to its overseas plants, the authority considers that the facts clearly establish that the exports were at dumping prices and landed price of imports were significantly below the selling price of the domestic industry. The exporter has not established with documentary evidence that its export price to its related entity was unreliable because of association of relationship. Since exporter has not established that the export price was unreliable, the authority has proceeded with its consistent practice of comparing selling price of the domestic industry with landed price of imports at the relevant port. It is only in a situation where the exporter establishes that the export price is unreliable due to relationship that the Designated Authority is required to consider resale price of Indian importer. As regards market share, the authority notes that the consequent adverse impact of dumped imports is clearly established in terms of significant deterioration on account of profits, return on capital employed and cash flow.
- xiv) It is clarified that for the purpose of injury analysis, the authority has considered performance of the domestic industry over the injury period. Further, profits, return on investment and cash profit have been determined considering cost of production and sales revenue for the relevant periods. The authority has not considered cost and price data pertaining to different periods for injury assessment.
- xv) As regards the issue of temporary nature of injury to the domestic industry, the Authority notes that there is no legal requirement that the domestic industry should have suffered injury during the entire injury period. What the Authority is required to consider is whether the performance of the domestic industry could be considered as injurious during POI, considering the performance over the injury period.
- xvi) The Authority notes that the product under consideration was being exported at dumping prices albeit from other sources in earlier period. Therefore, it would not be appropriate to consider return realized by the domestic industry over the injury period. Further, the Authority has consistent practice of adopting 22% return on capital employed for the purpose of determining non injurious price.
- xvii) As regards imports from Saudi Arabia, the domestic industry has filed a petition in respect of these imports and the case is under consideration of the Designated Authority. Under the rules, the Authority is required to segregate injury caused due to un-dumped imports. Injury suffered by the domestic industry from other dumped imports is not required to be segregated. This gets clearly established by the relevant legal provision, which is extracted below.

*It must be demonstrated that the dumped imports are, (v) through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry.*

- xvii) As regards the claim that the Ministry of Finance Notification on extending the time limit to complete the investigation was not available, the Authority notes that the letter as circulated intimating the oral hearing in the subject investigation, clearly stipulated that the date for completion of investigation was 10th April 2012.
- xviii) As regards the change in injury data by the domestic industry the Authority notes that no amendment in injury data has been made by the domestic industry. There was a clarification which was given by the domestic industry with regard to certain figures relating to salary and wages which were not annualized.
- xix) As regards the argument that injury caused due to the competition of the subject goods sold by Asian Paints has not been considered the authority notes that petitioner is supplying significant volumes of the product under consideration to Asian Paints itself. Such being the case, competition with Asian Paint cannot be said to be the principle cause of injury to the domestic industry.
- xx) As regards the submission on imports being inevitable, the Authority notes that it is a settled principle of law that demand supply gap for the product under consideration is totally irrelevant, as existence of demand-supply gap does not justifies dumping.

### Conclusion and Recommendations

78. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that the product under consideration has been exported to India from the subject Territory below its associated normal value, thus, resulting in dumping of the product. The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods. The material injury has been caused by the dumped imports from the Subject Territory.

**Indian industry's interest & other issues:**

79. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties in general is to eliminate injury caused to the domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the Subject Territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

80. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product(s) manufactured by using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the antidumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practice; would prevent the decline of the domestic industry; and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

**Recommendations**

81. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti dumping duty is required to offset dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends imposition of definitive anti dumping duty on imports of the subject goods from the Subject Territory in the form and manner described hereunder.

82. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the

domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in Col 8 of the table below is recommended to be imposed from the date of the Notification to be issued by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the European Union (except Sweden).

### Duty Table

Sl. No	Sub- headi- ng	Description of goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Current- cy
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	2905 42	Pentaerythritol	Any	European Union (excluding Sweden)	European Union (excluding Sweden)	M/s. PERSTORP CHEMICALS GMBH	M/s. PERSTORP CHEMICALS GMBH	379	Per/MT	US\$
2.	2905 42	Pentaerythritol	Any	European Union (excluding Sweden)	European Union (excluding Sweden)	M/s. PERSTD RP CHEMICALS GMBH	Any	490	Per/MT	US\$
3.	2905 .42	Pentaerythritol	Any	European Union (excluding Sweden)	European Union (excluding Sweden)	Any	Any	490	Per/MT	US\$
4	2905 .42	Pentaerythritol	Any	European Union (excluding Sweden)	Any excluding China and Taiwan	Any	Any	490	Per/MT	US\$
5.	2905 .42	Pentaerythritol	Any	Any excluding China and Taiwan	European Union (excluding Sweden)	Any	Any	490	Per/MT	US\$

83. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

84. An appeal against the order of the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority